FAIZANE MUFTI AHMAD YAR KHAN NAEEMI (HINDI)

(رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

फ़ैज़ाने मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी

DAWAT-E-ISLAMI

शो बाए फ़ैज़ाने औलिया व उलमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़िताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

क़िताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

तआरुफ़ मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह रिसाला "**फ़ैज़ाने मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه" **उर्दू** ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआदत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

ख़ास नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबित़ा करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़ैज़ाने मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ''ज़ियाए दुरूदो सलाम'' के सफ़ह़ा 6 पर फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद यार ख़ान बदायूनी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی एक मुत्तक़ी और परहेज़गार आ़लिमे दीन थे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक पाकबाज़ और नेक सीरत ख़ातून से निकाह़ फ़रमाया। कुछ अ़र्से बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से एक मदनी मुन्नी की विलादत हुई। पूरा घर ख़ुशियों से भर गया, मां बाप ख़ुशी से फूले न समाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को यके बा'द

(1) ... مسند ابی یعلی، ۳/۹۵، حدیث: ۲۹۰۱

दीगरे पांच मदनी मुन्नियां अ़ता फ़रमाईं। वालिदैन ने हर मदनी मुन्नी की विलादत पर इसे रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ जानते हुवे शुक्र अदा किया। उ़मूमन पहली बच्ची पर तो ख़ुशी की जाती है मगर यके बा'द दीगरे बच्चियां हों तो ख़ुशी नहीं की जाती अलबत्ता मज़हबी लोग "शिक्वा" नहीं करते मगर ख़्वाहिश नरीना औलाद की होती है। येह ऐसे राज़ी ब रिज़ाए इलाही थे कि मदनी मुन्ना न होने पर न गिला शिक्वा किया और न पेशानी पर बल पड़े और न ही कभी दिल में कोई रन्जो मलाल हुवा, तक़्दीर का लिखा समझ कर इसे ब ख़ुशी क़बूल किया और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे मगर मदनी मुन्ने की ख़्वाहिश दिल में चुटकियां लेती रही चुनान्चे, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में औलादे नरीना के लिये ख़ुसूसी दुआ़ मांगी और येह नज़्र मानी कि अगर लड़का पैदा हुवा तो उसे राहे ख़ुदा में ख़िदमते दीन के लिये वक़्फ़ कर दूंगा, दुआ़ क़बूलिय्यत के मर्तबे पर फ़ाइज़ हुई और बड़ी चाहतों और उमंगों के बा'द घर में एक मदनी मुन्ने की आमद हुई। घर भर में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, हर एक का चेहरा ख़ुशी से खिल उठा, घर में ग़ुर्बत के डेरे होने के बा वुजूद ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने मदनी मुन्ने की परवरिश में कोई कसर उठा न रखी थी। इन्हें नज़्र के अल्फ़ाज़ याद थे कि इसे राहे ख़ुदा में ख़िदमते दीन के लिये वक़्फ़ करना है बिल आख़िर वोह वक़्त भी आया कि राहे ख़ुदा में वक़्फ़ होने वाले इसी मदनी मुन्ने ने शैख़ुत्तफ़्सीर, मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी अशरफ़ी ओझानवी बदायूनी गुजराती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی के नाम व अल्क़ाबात से शोहरत पाई।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। آمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तारीख़ व मक़ामे विलादत

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی 4 जमादिल ऊला 1314 हिजरी ब मुत़ाबिक़ यकुम मार्च 1894 ईसवी को मह़ल्ला खेड़ा बस्ती ओझयानी (ज़िल्अ़ बदायूं, यु पी हिन्द) में सुब्ह़े सादिक़ की पुरनूर और बा बरकत साअ़त में पैदा हुवे।(2) शरफ़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़ क़ादिरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तारीख़े विलादत शव्वाल 1324 हिजरी/1906 ईसवी लिखी है।(3)

वालिदे माजिद के ह़ालात

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे माजिद ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद यार ख़ान बदायूनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़ारसी दर्सियात पर उ़बूर रखते थे, इन्हों ने जामेअ़ मस्जिद ओझयानी में एक मक्तब जारी किया था जिस में त़लबा को ता'लीम देते थे, ग़ालिबन शैख़ुल मशाइख़ ह़ज़रते सय्यिद अ़ली हुसैन अशरफ़ी मियां किछौछवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی से बैअ़त थे।(4)

1.....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 68 मुलख़्ख़सन
2.....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 64 मुलख़्ख़सन वग़ैरा
3.....तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत, स. 54
4.....तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत, स. 54 बित्तग़य्युर

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी पूरी ज़िन्दगी इबादतो रियाज़त और दीनदारी में बसर की । चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने घर में भी फ़ारसी की इब्तिदाई निसाबी ता'लीम का मक्तब क़ाइम किया और बस्ती के बच्चों को पढ़ाना शुरूअ़ कर दिया जिस में मुसलमानों के इलावा ग़ैर मुस्लिमों के बच्चे भी पढ़ने आते यूं बस्ती की अक्सरिय्यत आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शागिर्द रह चुकी थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ता'लीमात और हुस्ने अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर कई बच्चे अपने घरवालों से छुप कर कलिमए तय्यिबा पढ़ लेते और दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो जाते । चूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ज़रीअ़ए मआ़श मुस्तक़िल न था लिहाज़ा मक्तब में ता'लीम पाने वाले बच्चों के सर परस्तों की जानिब से जो कुछ ख़िदमत होती उसी पर ख़ानदान का गुज़ारा होता था । वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दूसरी बड़ी मसरूफ़िय्यत जामेअ़ मस्जिद ओझयानी की ख़िदमत थी जहां इन्हों ने इमामत, ख़िताबत और इन्तिज़ामी उमूर सब कुछ अपने ज़िम्मे ले रखा था मगर पैंतालीस साल का तवील अ़र्सा गुज़रने के बा वुजूद कुछ पाई पैसा न लिया यहां तक कि अगर कोई शख़्स आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ब हैसिय्यते इमाम खाने या कपड़े वग़ैरा के तहाइफ़ पेश करता तो भी क़बूल न करते और फ़रमाते : येह चीज़ें बस्ती के मुस्तहिक़ीन तक पहुंचा दी जाएं । वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बाज़ार तशरीफ़ ले जाते तो मह़ल्ले के बच्चों के अख़्लाक़ व किरदार की निगरानी पर ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाते और ज़रूरत पड़ती तो हिक्मते अ़मली से इस्लाह़ भी फ़रमाया करते थे ।(1)

1.....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 65 मुलख़्ख़सन

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम अपने मुआ़शरे में नज़र दौड़ाएं तो येह बात नुमायां तौ़र पर महसूस की जा सकती है कि वालिदैन अपनी औलाद की ज़ाहिरी ता'लीमो तरबिय्यत और ख़्वाहिशात पर हज़ारों बल्कि लाखों रूपे तो ख़र्च कर देते हैं मगर इन की अख़्लाक़ी व रूहानी ता'लीमो तरबिय्यत की जानिब ज़र्रा बराबर तवज्जोह नहीं देते जिस की वज्ह से वोह एक एक कर के मुआ़शरे में फैली हुई बुराइयों का शिकार होती चली जाती है और बा'ज़ औक़ात तो मुआ़मला इस ह़द तक पहुंच जाता है कि दिल ख़ून के घूंट पी कर रह जाता है याद रखिये कि औलाद अगर्चे बाप के जिगर का टुकड़ा और अपनी मां की आंखों का नूर होती है लेकिन इस से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती और इस्लामी मुआ़शरे का अहम फ़र्द है। अगर आज तरबिय्यत करते हुवे इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी और इस्लामी मुआ़शरे में इस की ज़िम्मेदारी न सिखाई तो इसे अपना फ़रमां बरदार बनाने का ख़्वाब देखना भी छोड़ दीजिये क्यूंकि येह इस्लाम ही है जो एक मुसलमान को अपने वालिदैन का मुती़ओ फ़रमां बरदार बनने की ता'लीम देता है। इस लिये औलाद की ज़ाहिरी ज़ेबो ज़ीनत, अच्छी ग़िज़ा, अच्छे लिबास और दीगर ज़रूरियात

की कफ़ालत के साथ साथ उन की अख़्लाक़ी व रूहानी तरबिय्यत के लिये भी कमरबस्ता हो जाइये ।[1]

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इश्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिद से महब्बत

वालिदे माजिद ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ईद के मुबारक दिन बहुत सी रेज़गारी लेते और बच्चों में बांटने के लिये बाहर बैठ जाते, बड़ी उ़म्र के अफ़राद भी येह कहते हुवे पैसे ले लेते कि आज तो उस्तादे मोह़तरम पैसे बांट रहे हैं हम भी कुछ ले लेते हैं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उ़म्र के आख़िरी ह़िस्से में बीमार रहने लगे यहां तक कि जिस्म अचानक सुन हो जाता और चलते हुवे लड़ खड़ा कर गिर जाते मगर मस्जिद के साथ ऐसा तअ़ल्लुक़ और दिली लगाव क़ाइम हो गया था कि किसी पल चैन न आता चुनान्चे, मस्जिद में मुसलसल ह़ाज़िर होते, कई मरतबा मस्जिद की सीढ़ियों से गिरे और चोंटें लगीं मगर किसी ह़ाल में मस्जिद से मुंह न मोड़ा, बा'दे विसाल ग़ुस्ल के वक़्त जिस्म पर चोटों और ज़ख़्मों के काफ़ी निशानात मौजूद थे ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर मस्जिद से महब्बत करना, मस्जिद में अपना वक़्त गुज़ारना

1 .....तरबिय्यते औलाद, स. 23, 24 वग़ैरा
2 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 66 मुलख़्ख़सन

और इसे आबाद करना यक़ीनन ख़ुश बख़्तों और सआ़दत मन्दों का हिस्सा है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़्त आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबिय्यत के बेशुमार मदनी क़ाफ़िले मुल्क ब मुल्क शहर ब शहर और क़रिया ब क़रिया 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन बल्कि 12 और 26 माह के लिये भी सफ़र कर के इल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे हैं और नेकी की दा'वत की धूमें मचा रहे हैं । इन ख़ुश नसीबों का अक्सर वक़्त मस्जिद में इल्मे दीन के ह़ल्क़ों में शिर्कत और सुन्नतें सीखने सिखाने में गुज़रता है आप भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल को अपनाने और आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । मस्जिद से मह़ब्बत और इसे आबाद करने के मुतअ़ल्लिक़ तीन अह़ादीस मुलाह़ज़ा कीजिये ।

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम मस्जिद में कसरत से आमदो रफ़्त रखने वाले किसी शख़्स को देखो तो उस के ईमान की गवाही दो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ [1]

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाते ।[2]

1 ... پ۱۰، التوبة:۱۸

2 ... ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمة الصلوة، ۴/۲۸۰ حدیث:۲۶۲۶

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर वक़ार है : जब कोई बन्दा ज़िक्रो नमाज़ के लिये मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से ऐसे ख़ुश होता है जैसे लोग अपने गुमशुदा शख़्स की अपने हां आमद पर ख़ुश होते हैं।[1]

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जो मस्जिद से मह़ब्बत करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपना मह़बूब बना लेता है।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी को पांच अदवार में तक़्सीम किया जा सकता है पहला दौर आबाई बस्ती ओझयानी (ज़िल्अ़ बदायूं, यु पी, हिन्द) में वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सर परस्ती में शुरूअ़ हुवा और ग्यारह बरस की उ़म्र में ख़त्म हुवा। इस में कुरआने पाक की ता'लीम से ले कर फ़ारसी की निसाबी ता'लीम और दर्से निज़ामी की इब्तिदाई कुतुब शामिल रहीं। दूसरा ता'लीमी दौर बदायूं शहर में गुज़रा जहां आप ने तक़रीबन 1325 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1905 ईसवी में मद्रसए शम्सुल उ़लूम में दाख़िला लिया और ह़ज़रते

1 ... ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب لزوم المساجد، ۱/۴۳۸، حدیث: ۸۰۰

2 ... مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب لزوم المساجد، ۲/۱۳۵، حدیث: ۲۰۳۱

अ़ल्लामा क़दीर बख़्श बदायूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی की निगरानी में तीन साल तक ता'लीम ह़ासिल की। तीसरा ता'लीमी दौर मेंढू (ज़िल्अ़ अ़लीगढ़, यु पी हिन्द) में गुज़रा जो तीन चार साल पर मुश्तमिल रहा।

सदरुल अफ़ाज़िल की बारगाह में

चौथे ता'लीमी दौर का आग़ाज़ 1332 हिजरी में हुवा जिस ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की क़िस्मत का सितारा चमका दिया और तक़्दीर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْهَادِی के दरे दौलत पर ले आई। वाक़िआ़ कुछ यूं हुवा कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के चचाज़ाद भाई मुरादाबाद में मुलाज़मत किया करते थे 1332 हिजरी में किसी काम से घर आना हुवा, जब वापस जाने लगे पुरज़ोर इसरार कर के आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अपने साथ ले कर जामिआ़ नईमिय्या मुरादाबाद ह़ाज़िर हो गए। सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْهَادِی ने आप पर शफ़्क़त करते हुवे दरयाफ़्त फ़रमाया : आप कौन से अस्बाक़ पढ़ते हैं ? आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने अस्बाक़ बताए तो सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या आप इन अस्बाक़ का इम्तिह़ान दे सकते हैं ? आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन अ़र्ज़ की : जी हां। चुनान्चे, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक एक कर के सुवाल फ़रमाते गए और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उन का तसल्ली भर जवाब देते रहे जिन्हें सुन कर ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत ख़ुश हुवे फिर आख़िर में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने चन्द सुवालात क़ाइम किये तो सदरुल

अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबात इस अन्दाज़ में बयान फ़रमाए कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अ़श अ़श कर उठे और समझ गए कि मेरे सामने इस वक़्त कोई आ़म शख़्सिय्यत नहीं बल्कि इल्मो हिक्मत का एक ठाठें मारता समन्दर मौजज़न है जिस की वुस्अ़त का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, फिर ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : इल्म के साथ ह़लावते इल्म (इल्म की मिठास) भी हो तो इस्तिक़ामत अ़ता होती है और इन्शिराह़े सद्र की दौलत मिलती है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : ह़लावते इल्म से क्या मुराद है ? फ़रमाया : ह़लावते इल्म तो कौनैन के ताजदार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात से निस्बत क़ाइम रखने से ही ह़ासिल हो सकती है लफ़्ज़ों में बयान नहीं की जा सकती । बस इसी एक मुलाक़ात ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़िन्दगी का रुख़ मोड़ दिया और यूं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जामिआ़ नईमिय्या में दाख़िला ले कर ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی जैसे शफ़ीक़ और मेहरबान उस्ताद के ज़ेरे साया इल्मो अ़मल की दौलत से फ़ैज़याब होने लगे । ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सिर्फ़ दर्सो तदरीस के शो'बे से वाबस्ता न थे बल्कि तह़रीर व तस्नीफ़ और मुनाज़िरे के साथ साथ मुसलमानों के दीनी व मिल्ली रहनुमा भी थे जिस की वज्ह से मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के अस्बाक़ में नाग़ा होने लगा और जब इस में इज़ाफ़ा हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जामिआ़ नईमिय्या से निकल खड़े हुवे, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को

इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बुलवाया और फ़रमाया कि आइन्दा आप की ता'लीम का ह़रज नहीं होने देंगे। उस दौर में ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ मुश्ताक़ अह़मद सिद्दीक़ी कानपुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मा'क़ूलात के इमाम और बुलन्द पाया उस्ताज़ समझे जाते थे चुनान्चे, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन से राबित़ा फ़रमाया कि आप जामिआ़ नईमिय्या मुरादाबाद तशरीफ़ ले आएं, मगर अ़ल्लामा मुश्ताक़ अह़मद कानपुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने येह शर्त़ पेश की, कि इस वक़्त मेरे पास जो त़लबा ज़ेरे ता'लीम हैं उन सब के क़ियाम का इन्तिज़ाम भी आप के ज़िम्मे होगा, जिसे ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मन्ज़ूर फ़रमा लिया और यूं ह़ज़रते अ़ल्लामा मुश्ताक़ अह़मद कानपुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی जामिआ़ नईमिय्या मुरादाबाद तशरीफ़ ले आए। अपने वक़्त के मन्झे हुवे शोहरत याफ़्ता उस्ताद के सामने ज़हीन फ़त़ीन इ़ल्म के शौक़ीन त़ालिबे इ़ल्म का एक निराला दौर शुरूअ़ हुवा। शागिर्द को हर घड़ी येह एह़सास कि उस्तादे मोह़तरम मह़्ज़ मेरी ता'लीम की ख़ात़िर यहां बुलाए गए हैं जब कि उस्तादे मोह़तरम के पेशे नज़र होता कि येही वोह त़ालिबे इ़ल्म है जिस के लिये हमें कानपुर से बुलाया गया है।

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का पांचवां और आख़िरी दौरे त़ालिबे इ़ल्मी उस वक़्त शुरूअ़ हुवा जब ह़ज़रते अ़ल्लामा मुश्ताक़ अह़मद कानपुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی जामिआ़ नईमिय्या मुरादाबाद से रुख़्सत होते वक़्त सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی की इजाज़त से आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

को अपने साथ मेरठ ले गए। यूं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन्नीस बरस की उ़म्र में 1334 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1914 ईसवी में सनदे फ़राग़त ह़ासिल की।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शौक़े इ़ल्म का दिया जलता रहता

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को दौरे त़ालिबे इ़ल्मी में रात मुत़ालए़ के लिये जो तेल मिलता था वोह तक़रीबन आधी रात तक चलता। चराग़ तो बुझ जाता मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शौक़े इ़ल्म का दिया जलता रहता चुनान्चे, जब मद्रसे का चराग़ गुल हो जाता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बाहर निकल आते और गली में जलते हुवे बल्ब की रौशनी में बैठ कर मुत़ालआ़ करने में मसरूफ़ हो जाते।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को मुत़ालए़ का किस क़दर ज़ौक़ो शौक़ था इस का अन्दाज़ा इन वाक़िआ़त से ब ख़ूबी लगाया जा सकता है चुनान्चे,

इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का शौक़े मुत़ालआ़

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के नामवर शागिर्द, मुह़र्ररे मज़्हबे ह़नफ़िय्या ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی हमेशा शब बेदारी फ़रमाया

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 69 ता 78 मुलख़्ख़सन
2 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 82 मुलख़्ख़सन

करते थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास मुख़्तलिफ़ क़िस्म की किताबें रखी होती थीं जब एक फ़न से उक्ता जाते तो दूसरे फ़न के मुत़ालए़ में लग जाते थे। येह भी मन्क़ूल है कि आप अपने पास पानी रखा करते थे जब नींद का ग़लबा होने लगता तो पानी के छींटे दे कर नींद को दूर फ़रमाते और फ़रमाया करते : नींद गर्मी से है लिहाज़ा इसे ठंडे पानी से दूर करो।(1) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुत़ालए़ का इतना शौक़ था कि रात के तीन हिस्से करते, एक हिस्से में इ़बादत, एक हिस्से में मुत़ालआ़ और बक़िय्या एक हिस्से में आराम फ़रमाते थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मुझे अपने वालिद की मीरास में से तीस हज़ार दिरहम मिले थे उन में से पन्दरह हज़ार मैं ने इ़ल्मे नह़्व, शे'र व अदब और लुग़त वग़ैरा की ता'लीम व तह़सील में ख़र्च किया और पन्दरह हज़ार ह़दीस व फ़िक़्ह की तक्मील पर।"(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।* اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ'ला ह़ज़रत का ज़ौक़े मुत़ालआ़

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के ज़ौक़े मुत़ालआ़ और ज़हानत का बचपन ही में येह आ़लम था कि उस्ताज़ साह़िब से कभी चौथाई किताब से ज़ियादा नहीं पढ़ी बल्कि चौथाई किताब उस्ताज़ साह़िब से

1 ... تعلیم المتعلم طریق التعلم، ص۱۰

2 ... تاریخ بغداد، ۲/ ۱۷۰

पढ़ने के बा'द बक़िय्या तमाम किताब का ख़ुद मुत़ालआ़ करते और याद कर के सुना दिया करते थे। इसी त़रह़ दो जिल्दों पर मुश्तमिल **अल उ़क़ूदुद्दुर्रिय्या** जैसी ज़ख़ीम किताब फ़क़त़ एक रात में मुत़ालआ़ फ़रमा ली।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अन्दाज़े मुत़ालआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! औराक़ पलटने, सफ़ह़ात गिनने और इस में लिखी हुई सियाह लकीरों पर नज़र डाल कर गुज़र जाने का नाम मुत़ालआ़ नहीं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने किताबों को मह़ज़ जम्अ़ नहीं किया बल्कि मुसलसल मुत़ालआ़, ग़ौरो फ़िक्र और अ़मली कोशिशें आप के किरदारे अ़ज़ीम का हिस्सा हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه किस त़रह़ मुत़ालआ़ फ़रमाते हैं इस का अन्दाज़ा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा मुत़ालए़ के मदनी फूलों से किया जा सकता है :

ह़दीसे पाक : "اَلْعِلْمُ اَفْضَلُ مِنَ الْعِبَادَۃِ" के अठ्ठारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से दीनी मुत़ालआ़ करने के 18 मदनी फूल

(अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

❁ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से मुत़ालआ़ कीजिये।

---

1 .....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1/70, 213

❁ मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल ह़म्दो सलात पढ़ने की आ़दत बनाइये, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस नेक काम से क़ब्ल **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द और मुझ पर दुरूद न पढ़ा गया उस में बरकत नहीं होती।(1) वरना कम अज़ कम بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ तो पढ़ ही लीजिये कि हर साह़िबे शान काम करने से पहले بِسۡمِ اللّٰہِ पढ़नी चाहिये।(2)

❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "जिन्नात का बादशाह" के सफ़ह़ा 23 पर है : क़िब्ला रू बैठिये कि इस की बरकतें बेशुमार हैं चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : दो त़लबा इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये परदेस गए, दो साल तक दोनों हम सबक़ रहे, जब वत़न लौटे तो उन में एक फ़क़ीह (या'नी ज़बरदस्त आ़लिम) बन चुके थे जब कि दूसरा इल्मो कमाल से ख़ाली ही रहा था। उस शहर के उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस अम्र पर ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ किया, दोनों के ह़ुसूले इल्म के त़रीक़ए कार, अन्दाज़े तकरार और बैठने के अत़्वार वग़ैरा के बारे में तह़क़ीक़ की तो एक बात जो कि नुमायां त़ौर पर सामने आई वोह येह थी कि जो फ़क़ीह बन के पलटे थे उन का मा'मूल येह था कि वोह सबक़ याद करते वक़्त क़िब्ला रू बैठा करते थे जब कि दूसरा जो कि कोरे का कोरा पलटा था वोह क़िब्ले की त़रफ़ पीठ कर के बैठने का आ़दी था, चुनान्चे, तमाम उ़लमा व फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस बात पर मुत्तफ़िक़

1 ... کنز العمال، ۱/۲۷۹، حدیث: ۲۵۰۷
2 ... ایضًا، ۱/۲۷۷، حدیث: ۲۴۸۷

हुवे कि येह ख़ुश नसीब इस्तिक़्बाले क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ करने) के एहतिमाम की बरकत से फ़क़ीह बने क्यूंकि बैठते वक़्त का'बतुल्लाह शरीफ़ की सम्त मुंह रखना सुन्नत है।[1]

❁ सुब्ह़ के वक़्त मुत़ालआ़ करना बहुत मुफ़ीद है क्यूंकि उ़मूमन उस वक़्त नींद का ग़लबा नहीं होता और ज़ेह्न ज़ियादा काम करता है।

❁ शोरो गुल से दूर पुर सुकून जगह पर बैठ कर मुत़ालआ़ कीजिये।

❁ अगर जल्दबाज़ी या टेन्शन (या'नी परेशानी) की ह़ालत में पढ़ेंगे मसलन कोई आप को पुकार रहा है और आप पढ़े जा रहे हैं या इस्तिन्जा की ह़ाजत है और आप मुसलसल मुत़ालआ़ किये जा रहे हैं, ऐसे वक़्त में आप का ज़ेह्न काम नहीं करेगा और ग़लत़ फ़ेह्मी का इमकान बढ़ जाएगा।

❁ किसी भी ऐसे अन्दाज़ पर जिस से आंखों पर ज़ोर पड़े मसलन बहुत मध्धम या ज़ियादा तेज़ रौशनी में या चलते चलते या चलती गाड़ी में या लेटे लेटे या किताब पर झुक कर मुत़ालआ़ करना आंखों के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सानदेह) है।

❁ कोशिश कीजिये कि रौशनी ऊपर की जानिब से आ रही हो, पिछली त़रफ़ से आने में भी ह़रज नहीं मगर सामने से आना आंखों के लिये नुक़्सानदेह है।

❁ मुत़ालआ़ करते वक़्त ज़ेह्न ह़ाज़िर और त़बीअ़त तरो ताज़ा होनी चाहिये।

❁ वक़्ते मुत़ालआ़ ज़रूरतन क़लम हाथ में रखना चाहिये कि जहां आप को कोई बात पसन्द आए या कोई ऐसा जुम्ला या मस्अला

1 ... تعلیم المتعلّم طریق التعلم، ص ٦٧

जिस की आप को बा'द में ज़रूरत पड़ सकती हो, ज़ाती किताब होने की सूरत में उसे अन्डर लाइन कर सकें।

۞ किताब के शुरूअ़ में उ़मूमन दो एक ख़ाली काग़ज़ होते हैं, उस पर याददाश्त लिखते रहिये या'नी इशारतन चन्द अल्फ़ाज़ लिख कर उस के सामने सफ़्हा नम्बर लिख लीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ अक्सर किताबों के शुरूअ़ में याददाश्त के सफ़्हात लगाए जाते हैं।

۞ मुश्किल अल्फ़ाज़ पर भी निशानात लगा लीजिये और किसी जानने वाले से दरयाफ़्त कर लीजिये।

۞ सिर्फ़ आंखों से नहीं ज़बान से भी पढ़िये कि इस त़रह़ याद रखना ज़ियादा आसान है।

۞ थोड़ी थोड़ी देर बा'द आंखों और गर्दन की वर्ज़िश कर लीजिये क्यूंकि काफ़ी देर तक मुसलसल एक ही जगह देखते रहने से आंखें थक जातीं और बा'ज़ औक़ात गर्दन भी दुख जाती है। इस का त़रीक़ा येह है कि आंखों को दाएं बाएं, ऊपर नीचे घुमाइये। इसी त़रह़ गर्दन को भी आहिस्ता आहिस्ता ह़रकत दीजिये।

۞ इसी त़रह़ कुछ देर मुत़ालआ़ कर के दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कर दीजिये और जब आंखों वग़ैरा को कुछ आराम मिल जाए तो फिर मुत़ालआ़ शुरूअ़ कर दीजिये।

۞ एक बार के मुत़ालए़ से सारा मज़मून याद रह जाना बहुत दुश्वार है कि फ़ी ज़माना हाज़िमे भी कमज़ोर और ह़ाफ़िज़े भी कमज़ोर ! लिहाज़ा दीनी कुतुबो रसाइल का बार बार मुत़ालआ़ कीजिये।

۞ मक़ूला है : اَلسَّبْقُ حَرْفٌ وَالتَّكْرَارُ اَلْفٌ या'नी सबक़ एक ह़र्फ़ हो और तकरार (या'नी दोहराई) एक हज़ार बार होनी चाहिये।

❁ जो भलाई की बातें पढ़ी हैं सवाब की निय्यत से दूसरों को बताते रहिये, इस त़रह़ اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को याद हो जाएंगी।[1]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़लती का बर मला ए'तिराफ़

कुत़बे मर्कज़ुल औलिया (लाहौर) शैख़ुल ह़दीस जामिआ़ नईमिय्या ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ज़ीज़ अह़मद ज़ियाई बदायूनी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی अपने अ़ह्दे त़ालिबे इल्मी में अस्बाक़ के मुत़ालए़ और तकरार के बेह़द पाबन्द थे, आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه रात गए तक आइन्दा सुब्ह़ पढ़े जाने वाले अस्बाक़ का मुत़ालआ़ करते और सुब्ह़ दरजे में उस्तादे मोह़तरम के रू बरू हो कर अस्बाक़ की तक़रीर सुनते फिर दीगर त़लबा साथियों के साथ सबक़ की दोहराई करने बैठ जाते जिस में उस्तादे मोह़तरम की सबक़ से मुतअ़ल्लिक़ पूरी तक़रीर दोहरा देते थे उस्तादे मोह़तरम के क़ाइम कर्दा सुवालात व जवाबात पूरी तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाते। अक्सर औक़ात अपनी जानिब से नए सुवालात और फिर उन के जवाबात ख़ुद ही पेश करते अगर कहीं उलझन का शिकार होते तो उस्तादे मोह़तरम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर उसे दूर कर लेते कम ही ऐसा होता कि कोई बात बारगाहे उस्ताद में रद हो जाए और जब कभी ऐसा हो भी जाता तो दीगर त़लबा के सामने अपनी ग़लती का बर मला ए'तिराफ़ कर लेते और किसी क़िस्म की शर्म मह़सूस न करते चुनान्चे, आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ख़ुद इस सिलसिले में फ़रमाया करते थे कि मैं

[1]....तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ 4, शौक़े इल्मे दीन, स. 27

जब तक अपनी ग़लती का ए'तिराफ़ नहीं कर लेता उस वक़्त तक मेरे दिलो दिमाग़ में एक हैजानी कैफ़िय्यत बरपा रहती है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान ख़ता और भूल का मुरक्कब है लिहाज़ा जब भी कोई ग़लती हो जाए और कोई शख़्स उस की निशानदेही करे तो फ़ौरन अपनी ग़लती मान लेनी चाहिये चाहे वोह उम्र, तजरिबे और रुत्बे में हम से कम ही क्यूं न हो अगर्चे ऐसे मौक़अ पर नफ़्स मुख़्तलिफ़ हीले बहाने सुझाता है और तरह तरह की राहें दिखाता है मगर याद रखिये कि अपनी ग़लती का ए'तिराफ़ और इक़रार करने वाले आ'ला किरदार और उम्दा औसाफ़ के मालिक होते हैं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते गिरामी में येह वस्फ़ नुमायां तौर पर नज़र आता है कि वक़्तन फ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले "मदनी मुज़ाकरात" में इस्लामी भाई मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मसलन अक़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअतो तरीक़त, तारीख़ो सीरत, साइन्स व तिब्ब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, मआशी व मुआशरती व तन्ज़ीमी मुआमलात और दीगर बहुत से मौज़ूआत के मुतअल्लिक़ सुवालात करते हैं और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें हिक्मत आमोज़ व इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबे हुवे जवाबात से नवाज़ते हैं। इल्म के समन्दर होने के बा वुजूद आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आग़ाज़ में शुरकाए मदनी मुज़ाकरा से कुछ इस तरह आजिज़ी भरे अल्फ़ाज़ इरशाद फ़रमाते हैं : आप सुवालात कीजिये, मगर हर सुवाल का जवाब वोह भी बिस्सवाब

1 .....हालाते ज़िन्दगी, हयाते सालिक, स. 71 ता 72 मुलख़्ख़सन

(या'नी दुरुस्त) दे पाऊं, ज़रूरी नहीं, मा'लूम हुवा तो अ़र्ज़ करने की कोशिश करूंगा। अगर मुझे भूल करता पाएं तो फ़ौरन मेरी इस्लाह़ फ़रमाएं, मुझे अपने मौक़िफ़ पर बेजा अड़ता हुवा नहीं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शुक्रिय्या के साथ रुजूअ़ करता पाएंगे।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़ालिबुल इ़ल्म हो तो ऐसा !

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी में एक रात त़ालिबे इ़ल्मों ने ख़ूब शोर शराबा किया और काफ़ी देर तक गुल गपाड़ा मचाते रहे जिस की वज्ह से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने अस्बाक़ का मुत़ालआ़ बिल्कुल न कर सके, सुब्ह़ दरजे में उस्तादे मोह़तरम अ़ल्लामा क़दीर बख़्श बदायूनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से "नह़्वे मीर" का सबक़ पढ़ने बैठे तो इन्तिहाई तवज्जोह और यकसूई के बा वुजूद भी सबक़ समझ में नहीं आया, उस्तादे मोह़तरम सबक़ की तक़रीर करते हुवे आगे बढ़ रहे थे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه इब्तिदाई सबक़ समझ न आने पर पेचो ताब खा रहे थे, बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आंखें भर आईं और टप टप आंसू गिरने लगे। उस्तादे मोह़तरम ने येह मन्ज़र देखा तो फ़रमाने लगे : अह़मद यार ख़ान ! क्या परेशानी है रात मुत़ालआ़ नहीं किया और फिर भी सबक़ समझने की कोशिश करते हो ? फिर शफ़ीक़ और मेहरबान उस्ताद ने दरजे में बा वुज़ू

1 .....तकब्बुर, स. 77 बित्तग़य्युर

बैठने की तरग़ीब दिलाई, उस्तादे मोहतरम अ़ल्लामा क़दीर बख़्श बदायूनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की निगाहे कश्फ़ व बसीरत देख कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हैरत ज़दा रह गए चुनान्चे, आप ने उस्तादे मोहतरम की तरग़ीब पर लब्बैक कहते हुवे दरजे में बा वुज़ू बैठने की निय्यत की और रात का वाक़िआ़ कह सुनाया जिस की वज्ह से मुत़ालए़ से महरूम रह गए थे ह़ज़रते अ़ल्लामा क़दीर बख़्श رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसी वक़्त हिदायात जारी कर दी कि अह़मद यार ख़ान के लिये फ़ौरी त़ौर पर अलग कमरे में रिहाइश का इन्तिज़ाम कर दिया जाए। इस नए इन्तिज़ाम से मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की तमाम परेशानियां दूर हो गईं मज़ीद लुत़्फ़ येह हुवा कि उस कमरे में शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ज़ीज़ अह़मद बदायूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی जैसे मेह़नती और समझदार त़ालिबे इ़ल्म की रफ़ाक़त मुयस्सर आ गई।[1]

खाने की क़ित़ार में पीछे रहते

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی ने त़ालिबे इ़ल्मी का दौर बड़ी मेह़नत और जांफ़िशानी से गुज़ारा बस किताबें होतीं और आप होते यहां तक कि खाने का वक़्त शुरूअ़ हो जाता तो त़लबा खाने का अच्छा और उ़म्दा ह़िस्सा ह़ासिल करने के लिये एक दूसरे पर सब्क़त ले जाने की कोशिश करते और जल्दी जल्दी क़ित़ार में लग जाते मगर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सब से आख़िर में आते और बचा खुचा जो भी मुयस्सर आता ले लेते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते। अक्सर औक़ात तो रूखी

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 71 मुलख़्ख़सन

रोटी ही हिस्से में आती जिसे देख कर बूढ़े बावर्ची की ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ जारी हो जाते : मैं ने जिन तलबा को खाने पर झपटते देखा है उन्हें अपना वक़्त ज़ाएअ करते ही देखा है वोह कुछ नहीं कर पाते तुम चूंकि उन सब से जुदा और अलग हो इस लिये एक दिन इल्म के आफ़्ताब बन कर चमकोगे ।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई इल्मे दीन की सहीह क़द्रो मन्ज़िलत पहचानने वाले तलबा ही इल्म के आफ़्ताब व माहताब बन कर चमकते हैं जिन की किरनों से एक ज़माना रौशन होता है तलबा में इल्मे दीन के हुसूल में सुस्ती और ग़फ़्लत हर दौर और हर ज़माने में मुख़्तलिफ़ रही है अगर कुछ अर्से पहले तलबा खाने पीने के शौक़ीन बन कर इल्मे दीन के हुसूल में ग़फ़्लत का शिकार थे तो दौरे हाज़िर में तलबा के हाथ में किताब के बजाए नित नए मोबाइल और मोबाइल पर मुख़्तलिफ़ कॉल्ज़, एस एम एस पेकेजिज़ और उस में मौजूद रेडियो पर मुख़्तलिफ़ खेलों की बराहे रास्त कॉमेन्ट्री नीज़ फ़ेसबुक का बढ़ता हुवा रुजहान इन्हें इल्म से दूर और ग़फ़्लत से क़रीब कर रहा है पहले तलबा मुताले के साथ औरादो वज़ाइफ़ का भी शौक़ रखते थे और नमाज़ के बा'द जेब से तस्बीह निकला करती थी और आज मोबाइल निकलता है । पहले तलबा को किसी एक वक़्त में तिलावते क़ुरआने करीम की भी सआदत हासिल रहती थी मगर अब येह ख़िदमत सिर्फ़ हुफ़्फ़ाज़ तलबा ही अन्जाम देते हैं और इन में से भी अक्सर रमज़ाने करीम

1 .....हालाते ज़िन्दगी, हयाते सालिक, स. 82 मुलख़्ख़सन

का इन्तिज़ार करते हैं। फिर अगर कोई त़ालिबे इल्म मुत़ालए के लिये किताब उठा भी लेता है तो दूसरे हाथ में मोबाइल रखता है जिस पर दोस्तों से कम अज़ कम तह़रीरी गुफ़्त्गू (ब ज़रीअ़ए एस एम एस) जारी रहती है और यूं येह मौक़अ़ भी गंवा देता है और त़लबा के इजतिमाई मुत़ालए की ह़ालत भी इन्तिहाई नाज़ुक सूरते ह़ाल से दो चार है इधर किसी त़ालिबे इल्म के मोबाइल पर कोई एस एम एस आया उधर किताब रख कर एक दूसरे को वोह मेसेज सुनाने और उस पर तबसिरे करने शुरूअ़ कर देते हैं।(1)

तदरीसी दौर की झलकियां

उस्तादे मोह़तरम ह़ज़रते अ़ल्लामा सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को दस्तारे फ़ज़ीलत बांधने के साथ ही जामिअ़ा नईमिय्या मुरादाबाद में तदरीस के फ़राइज़ सोंप दिये, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जल्द ही अपने आप को एक कामयाब मुदर्रिस साबित कर दिया, साथ साथ जामिअ़ा नईमिय्या में फ़तवा नवेसी की ख़िदमात भी सर अन्जाम देने लगे। फिर सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हिदायत पर मद्रसए मिस्कीनिय्या (धोराजी, काठियावाड़ हिन्द) तशरीफ़ ले गए जहां 9 साल तक तदरीस से वाबस्ता रहे जब मद्रसए मिस्कीनिय्या गर्दिशे लैलो नहार का शिकार हो कर माली मुश्किलात से दो चार हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जामिअ़ा नईमिय्या लौट आए फिर एक साल बा'द ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हिदायत पर इल्मो अ़मल का येह

1.....मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 69 मुलख़्ख़सन

दरया कुछ अ़र्सा किछौछा शरीफ़ और फिर भखी शरीफ़ (तह़सील फालिया ज़िल्अ़ मन्डी बहाउद्दीन) में बहता रहा इस के बा'द अहले गुजरात की क़िस्मत का सितारा चमका और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़िल्अ़ गुजरात (पंजाब पाकिस्तान) तशरीफ़ ले आए और ज़िन्दगी के तमाम अय्याम यहीं गुज़ार दिये बारह तेरह बरस दारुल उ़लूम ख़ुद्दामुस्सूफ़िय्या गुजरात और दस बरस अन्जुमने ख़ुद्दामुर्रसूल में फ़राइज़े तदरीस अन्जाम देते रहे, विसाल से छे बरस क़ब्ल जामिआ़ गौसिय्या नईमिय्या में तस्नीफ़, इफ़्ता और तदरीस का काम जारी रखा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने (सिवाए इ़ल्मुल मीरास के) अपनी तमाम तसानीफ़ गुजरात ही के ज़माने में तह़रीर फ़रमाईं जिन की रौशनी गुजरात से निकल कर आ़लम में चहार सू फैल गई।(1)

मुफ़्ती साहि़ब के दिन रात का जदवल

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की पूरी ज़िन्दगी वक़्त की पाबन्दी और मुस्तक़िल मिज़ाजी के मुआ़मले में मश्हूर है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हर एक को वक़्त की क़द्र का हुक्म फ़रमाया करते थे। काम मुख़्तसर हो या त़वील जिसे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक मरतबा शुरूअ़ फ़रमा लेते उसे इस्तिक़ामत के साथ मुक़र्ररा वक़्त पर ही अदा करते जिस का अन्दाज़ा आप के ह़ालात व मा'मूलात से ब ख़ूबी हो जाता है चुनान्चे, रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज्र पौन घन्टा रूह़ परवर इजतिमाअ़ जामेअ़ मस्जिद गौसिय्या (पाकिस्तान चौक,

1.....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 83 ता 87, तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत, स. 55 मुलख़्ख़सन

ज़िल्अ़ गुजरात) मुन्अ़क़िद होता जिस में कभी कमी होते देखी गई न ज़ियादती, पूरे आधा घन्टा दर्से क़ुरआन होता जब कि पन्दरह मिनट दर्से ह़दीस के होते जिसे सुनने के लिये लोग दस दस मील दूर बल्कि दूर दराज़ शहरों से भी आते चालीस साल के त़वील अ़र्से में दर्से क़ुरआन मुकम्मल हुवा तो फिर दोबारा शुरूअ़ फ़रमा दिया जो विसाले मुबारक तक जारी रहा, दर्से क़ुरआनो ह़दीस के बा'द इश्राक़ व चाश्त के नवाफ़िल अदा करते फिर नाश्ते से फ़ारिग़ हो कर तदरीस की ख़िदमात सर अन्जाम देते और इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से त़लबा के दिलो दिमाग़ को मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर करते फिर दो घन्टे तक तस्नीफ़ व तालीफ़ में मश्ग़ूल रहा करते इस के बा'द दोपहर का खाना तनावुल फ़रमाते और एक घन्टा क़ैलूला (या'नी दोपहर के वक़्त कुछ देर आराम) फ़रमाते, नमाज़े ज़ोहर के बा'द एक पारह तिलावत करते और फिर तह़रीर व तस्नीफ़ की मसरूफ़िय्यात के साथ साथ मुल्क भर से आए हुवे सुवालात और ख़ुत़ूत़ के जवाबात इरशाद फ़रमाते यहां तक कि नमाज़े अ़स्र का वक़्त हो जाता, बा'द नमाज़े अ़स्र चेहल क़दमी करते हुवे ह़ज़रत सच्ची सरकार साईं करमे इलाही कानुवां वाली सरकार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर होते, जाते हुवे ज़बान पर दुरूदे ताज के नज़राने होते तो लौटते हुवे दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ विर्दे ज़बां होती और ऐन अज़ाने मग़रिब के वक़्त मस्जिद में सीधा क़दम रखते, नमाज़े मग़रिब अदा करने के बा'द घर आ कर सुन्नतें, नवाफ़िल और सलातुल अव्वाबीन अदा करते फिर खाना तनावुल फ़रमाते इस के

बा'द घड़ी देख कर ग्यारह मिनट तक चेहल क़दमी फ़रमाते और फिर नमाज़े इशा तक मुत़ालए में मसरूफ़ रहते, इशा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ कर सुन्नत व नवाफ़िल घर में अदा करते और ग्यारह मिनट तक त़लबा से फ़िक़ही मसाइल पर गुफ़्तगू फ़रमाते और फिर आराम के लिये तशरीफ़ ले जाते।[1]

ग़ौसे आ'ज़म से वालिहाना मह़ब्बत

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी ज़िन्दगी में क़ुत़बे रब्बानी, शहबाज़े ला मकानी, क़िन्दीले नूरानी ग़ौसे समदानी, मुह़ियुद्दीन हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की निस्बत से ग्यारह के अ़दद को बड़ी अहम्मिय्यत दिया करते थे यहां तक कि आप के घर में ऊपर नीचे सब मिला कर कुल ग्यारह कमरे थे।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मग़रिब के बा'द ग्यारह मिनट तक चेहल क़दमी और इशा के बा'द ग्यारह मिनट तक गुफ़्तगू करना और फिर घर में ग्यारह कमरों का होना हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से गहरी अ़क़ीदतो मह़ब्बत और उल्फ़त की अ़लामत व निशानी है और अ़क़ीदतो मह़ब्बत क्यूं न होती कि हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : मैं अपने मुरीदों का क़ियामत तक के लिये तौबा पर मरने का (बि फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ) ज़ामिन हूं।[3]

1.....ह़ालाते ज़िन्दगी, सवानेहे उ़म्री, स. 24 मुलख़्ख़सन वग़ैरा
2.....ऐज़न
3.....बहजतुल अस्रार, स. 191

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाते हैं : रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे एक दफ़्तर अ़ता फ़रमाया जो ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ था और उस में क़ियामत तक के मेरे मुरीदों के नाम थे और मुझ से फ़रमाया : قَدْ وَهَبْتُهُمْ لَكَ या'नी येह सब तुम्हें बख़्श दिये गए।[1]

ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की मह़ब्बत और औलियाए उ़ज़्ज़ाम की चाहत और उ़लमाए किराम की अ़क़ीदत दिल में बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और ख़ूब ख़ूब रह़मतें और बरकतें लूटिये।

आप जैसा पीर होते क्या ग़रज़ दर दर फिरूं
आप से सब कुछ मिला या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक से ज़ाइद घड़ियां रखते

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی रात दो बजे उठ कर नमाज़े तहज्जुद और वित्र अदा करते फिर कुछ देर वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल रहते इस के बा'द एक घन्टा आराम फ़रमाते और फिर उठ कर वज़ाइफ़ पढ़ते रहते, फ़ज्र की सुन्नत घर में अदा करते फिर दोनों शहज़ादों को ले कर मस्जिद तशरीफ़ ले जाते आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने पास एक से ज़ाइद घड़ियां रखा करते थे एक कलाई पर होती तो दूसरी जेब में, कभी कभार तो जेब में दो

---

1 .....बहजतुल अस्रार, स. 193

घड़ियां रखा करते थे फिर इन घड़ियों का वक़्त दुरुस्त रखने का भी ख़ूब ख़याल रखते और येह सारा एहतिमाम दर अस्ल नमाज़ और जमाअ़त के लिये होता था।

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! अल्लाह वालों की शान ऊंची और अदाएं निराली होती हैं इन के अन्दाज़ आ़म लोगों से जुदा होते हैं येह शरीअ़त पर अ़मल करने का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाते हैं दौरे ह़ाज़िर में येही अन्दाज़ येही सोच और फ़िक्र हमें शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वुजूदे मसऊ़द में नज़र आती है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आराम फ़रमाते वक़्त अपने क़रीब दो अलार्म सेट रखते हैं। जब आप से ह़िक्मत दरयाफ़्त की गई तो इरशाद फ़रमाया : अगर किसी दिन सेल कमज़ोर होने या किसी ख़राबी के बाइ़स एक अलार्म ख़ामोश रहा तो दूसरे अलार्म के ज़रीए नींद से बेदार होने की सूरत बन जाएगी और यूं नमाज़ वक़्त पर अदा हो जाएगी।[1]

नमाज़ के वक़्त बस ! नमाज़ की तय्यारी हो

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अज़ान सुनने का बहुत एहतिमाम फ़रमाते जिस वक़्त अज़ान होती तो पूरे घर में सन्नाटा छा जाता। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि मुसलमान की अस्ल ख़ुशी और रौनक़ नमाज़ है लिहाज़ा नमाज़ के औक़ात में मुसलमानों के घरों में ईद की त़रह़ चेहल पेहल और

1 .....फ़िक्रे मदीना, स. 107

रौनक़ होनी चाहिये हर कोई नमाज़ की तय्यारी में नज़र आना चाहिये बिल ख़ुसूस फ़ज्र व इ़शा में हर घर के हर कमरे में रौशनी होनी चाहिये शादी बियाह और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के तहवारों में तो कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार भी ख़ुशियां मनाते और चेहल पेहल करते नज़र आते हैं।(1)

आ़शिक़े नमाज़े बा जमाअ़त

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नमाज़े बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ अदा करने के गोया आ़शिक़ थे इसी वज्ह से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मुसलसल चालीस पचास साल तक देखने वालों ने येही देखा कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कभी तक्बीरे ऊला फ़ौत न हुई आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पेश इमाम साहि़ब को हुक्म दे रखा था कि किसी भी बड़ी से बड़ी शख़्सिय्यत की वज्ह से नमाज़े बा जमाअ़त में आधे मिनट की ताख़ीर भी न हो हर एक को नमाज़ की ख़ुद फ़िक्र होनी चाहिये अगर्चे मैं क्यूं न होऊं।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़तो त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ बनाम "मदनी इन्आ़मात" अ़त़ा फ़रमाए हैं चुनान्चे, मदनी इन्आ़म नम्बर 2 में नमाज़े बा जमाअ़त की अहम्मिय्यत और फ़िक्र पैदा करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

1.....ह़ालाते ज़िन्दगी, सवानेहे़ उ़म्री, स. 25 मुलख़्ख़सन वग़ैरा
2.....ह़ालाते ज़िन्दगी, सवानेहे़ उ़म्री, स. 24 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद में पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाई ?

ऐ काश ! हम पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त पहली सफ़ में अदा करने वाले बन जाएं नमाज़े बा जमाअ़त की फ़ज़ीलत के तो क्या कहने कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : नमाज़े बा जमाअ़त तन्हा पढ़ने से 27 दर्जे बढ़ कर है ।[1]

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : जो त़हारत कर के अपने घर से फ़र्ज़ नमाज़ के लिये निकला उस का सवाब ऐसा है जैसा ह़ज करने वाले मोह़रिम (एह़राम बांधने वाले) का ।[2]

और तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ने वाले को ह़दीसे मुबारका में क्या ख़ूब बशारत अ़त़ा फ़रमाई है कि जो मस्जिद में बा जमाअ़त 40 रातें नमाज़े इ़शा इस त़रह़ पढ़े कि पहली रक्अ़त फ़ौत न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख देता है ।[3]

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़्ती साह़िब का ख़ाना

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नाश्ते में गन्दुम के आटे की रोटी और सब्ज़ कश्मीरी इलाइची वाली

1 مسلم، کتاب المساجد، باب فضل صلاة الجماعة، ص ۳۲۶، حدیث: ۲۵۰
2 ابو داؤد، کتاب الصلوٰة، باب ماجاء فی فضل المشی الی الصلوٰة، ۱/۲۳۱، حدیث: ۵۵۸
3 ابن ماجه، کتاب المساجد والجماعات، باب صلاة الفجر..الخ، ۱/۴۳۷، حدیث: ۷۹۸

चाए नोश फ़रमाते, दोपहर में आलू, गोश्त ख़ुसूसन बकरी के पहलू का और तरकारियों में कद्दू शरीफ़ पसन्द फ़रमाते । खाने में अक्सर एक एक छटांक की दो पतली रोटियां होतीं अगर कभी भारी रोटी पक जाती तो न खाते या फिर कुछ बचा देते साथ अदरक का पानी, मूली या चुक़न्दर ज़रूर होता । बा'द नमाज़े इशा भेंस का एक पाव ख़ालिस दूध नोश फ़रमाने का मा'मूल था जब कि मिठाइयों में क़लाक़न्द, सोहन हल्वा, बदायूं वाले पेड़े और फलों में आम पसन्द थे ।(1)

खाने का अन्दाज़

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی खाना हमेशा सीधे हाथ से खाते और चमचा सिर्फ़ दूध और चाए के लिये इस्ति'माल करते, चटाई पर बैठ कर खाना खाते अगर बच्चे मौजूद होते तो एक बड़ी प्लेट में उन्हें अपने साथ बिठा कर खिलाते, अगर किसी महफ़िल में जल्वा फ़रमा होते सब पर लाज़िम होता कि हाथ धोएं और بِسْمِ الله शरीफ़ बुलन्द आवाज़ से पढ़ कर खाना शुरूअ़ करें, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पहले निवाले पर بِسْمِ الله शरीफ़ बुलन्द आवाज़ से पढ़ते । जब कि हर निवाले पर आहिस्ता आहिस्ता पढ़ते, जो चीज़ ख़ास आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये होती उसे मुकम्मल ख़त्म करते और शैतान के लिये कुछ न छोड़ते, खाने से क़ब्ल हाथ धोने की सुन्नत पर तो इस क़दर सख़्ती से कारबन्द थे कि

1 .....हालाते ज़िन्दगी, स. 183 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

अगर ग़ुस्ल करने के फ़ौरन बा'द दस्तरख़्वान पर आना होता तो भी पहले हाथ ज़रूर धोया करते।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बा अ़मल आ़लिमे दीन होने के साथ साथ आ़शिक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी थे, इ़श्क़े रसूल और मह़ब्बते रसूल का तक़ाज़ा भी येही है कि अपने मह़बूब व प्यारे आक़ा, दो जहां के मालिको मौला صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर हर दम हर आन अ़मल किया जाए। फ़ी ज़माना सुन्नतों पर अ़मल और इस्तिक़ामत की एक झलक हमें शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबारका में भी नज़र आती है कि बारहा देखा गया है कि जब मुलाक़ात के बा'द दस्तरख़्वान बिछाया जाता है तो उ़मूमन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ख़ुद खाना खाने की अच्छी अच्छी निय्यतें करवाते और ब आवाज़े बुलन्द दुआ़ पढ़ाते हैं। जिस वक़्त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने दोनों हाथ धो कर वापस तशरीफ़ लाते हैं अगर कोई हाथ मिलाना या दुआ़ वग़ैरा के लिये कोई परची पकड़वाना चाहता है तो इशारे से मन्अ़ फ़रमा देते हैं।

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर
चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़्ती साह़िब के ख़ानगी मुआ़मलात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चों की वालिदा का नेक सीरत और नेक त़बीअ़त होना अ़त़िय्यए ख़ुदावन्दी है कि ह़दीसे

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, स. 183 मुलख़्ख़सन

पाक में इसे एक मोमिन के लिये तक़्वा के बा'द सब से बेहतरीन चीज़ क़रार दिया है चुनान्चे, हम बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तक़्वा के बा'द मोमिन के लिये नेक बीबी से बेहतर कोई चीज़ नहीं अगर उसे हुक्म करता है तो वोह इत़ाअ़त करती है और उसे देखे तो ख़ुश कर दे और उस पर क़सम खा बैठे तो क़सम सच्ची कर दे और अगर वोह कहीं चला जाए तो अपने नफ़्स और शोहर के माल में भलाई करे (या'नी ख़ियानत व ज़ाएअ़ न करे)।[1]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की घरेलू ज़िन्दगी को बच्चों की वालिदए मोह़तरमा ने किस त़रह़ अपने सब्र, बुर्दबारी और मुस्तक़िल मिज़ाजी की वज्ह से एक मिसाली ज़िन्दगी बना दिया था। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا का तअ़ल्लुक़ शैख़ूपुर (ज़िल्अ़ बदायूं हिन्द) के एक खाते पीते घराने से था। 1919 ईसवी में अ़क़्दे ज़ौजिय्यत का शरफ़ पाया और ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की रफ़ाक़त में एक लम्बे अ़र्से तक वत़न से हज़ारों मील दूर रह कर अपनी ज़िन्दगी के अय्याम कमाले इस्तिक़ामत के साथ गुज़ारे। ख़ुशी और राह़त के दिन देखे तो ग़म और तक्लीफ़ के कठिन मराह़िल से भी गुज़रीं मगर निहायत सब्रो शुक्र की ख़ामोश और बा वक़ार ज़िन्दगी गुज़ारी, मुश्किलात और गर्दिशे अय्याम का न कभी बाहर वालों से गिला शिक्वा किया न कभी घर में कोई कलाम किया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا को ह़ज़रते

1 .....سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب فضل النساء، ۲/ ۴۱۴، حدیث: ۱۸۵۷

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मन्सबे दीनी और इस के तक़ाज़ों का कामिल एह़सास था इस लिये उमूरे ख़ानादारी से ले कर बच्चों की तरबिय्यत तक के तमाम फ़राइज़ एह़सासे ज़िम्मेदारी के साथ अदा करती रहीं घरबार की मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद घर की हर चीज़ इन्तिहाई सलीक़े और क़रीने से सजी होती। घर का माह़ोल ऐसा ख़ुश गवार रखती थीं कि मुफ़्ती साह़िब को कभी ना गवारी का एह़सास न होता। दुख तक्लीफ़ या रन्जो ग़म की कोई लहर उठती तो इस अ़ज़ीम ख़ातून के तह़म्मुल मिज़ाजी और बुर्दबारी की दीवार से टकरा कर पाश पाश हो जाती। आख़िरी अय्याम में सिह़्ह़त गिरने लगी थी जिस की वज्ह से कमज़ोरी बढ़ती गई मगर इस के बा वुजूद घर के फ़राइज़, नमाज़, रोज़ा और बच्चों की ता'लीम में फ़र्क़ न आने दिया सिर्फ़ गुजरात ही में सेंकड़ों इस्लामी बहनों, मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا से पूरा क़ुरआने पाक तजवीद के साथ पढ़ा था। ह़ज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तमाम औलाद इन्ही के बत्न से हुई थी। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا का इन्तिक़ाल 1949 ईसवी में हुवा जिस का ह़ज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को गहरा रंज पहुंचा। 1955 ईसवी एक नेक और बेवा ख़ातून से दूसरा निकाह़ फ़रमाया जिन्हों ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत और उमूरे ख़ानादारी में किसी क़िस्म की कोताही न की उस नेक ख़ातून ने ह़ज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तमाम औलाद को अपनी औलाद ही समझा और उन्हें कभी मां की कमी महसूस न होने दी।[1]

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 89 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की अहलिय्या मोहतरमा के सब्रो तहम्मुल और बुर्दबारी में हमारी इस्लामी बहनों के लिये भी कई मदनी फूल हैं कि इस्लामी बहनों के मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में कुरआने पाक पढ़ने पढ़ाने के साथ साथ घर के काम काज खुश दिली से बजा लाएं, बच्चों की तरबिय्यत इस्लामी खुतूत पर करें, घर का माहोल मदनी बनाएं और हर मुश्किल और परेशानी में सब्र का दामन हाथ से न छोड़ें नीज़ बच्चों के अब्बू से गिला शिक्वा करने के बजाए दा'वते इस्लामी के कामों में उन का हाथ बटाते हुवे उन की खूब हौसला अफ़्ज़ाई करें ।

सादगी व आजिज़ी

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی निहायत सफ़ेद शफ़्फ़ाफ़ लिबास पहनते और सफ़ेद या उ़नाबी रंग का इमामा शरीफ़ बांधा करते थे । आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का लिबास मा'मूली और दरमियाना होता, बे कॉलर की क़मीस, कुर्ता, शल्वार और पाजामा सब पहन लेते । मौसिमे गर्मा में देसी मलमल का कुर्ता पहनते जब कि मौसिमे सर्मा में आ़म तौर पर वॉस्कट और जर्सी इस्ति'माल करते, सादगी का येह आ़लम था कि शागिर्दों और अ़क़ीदत मन्दों के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा होते और कोई अजनबी आ जाता तो उसे आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पहचानना मुश्किल हो जाता, इसी त़रह़ दर्सो बयान के लिये किसी दूसरे शहर तशरीफ़ ले जाते तो इस्तिक़्बाल करने वालों को अक्सर येह पूछना पड़ जाता कि मुफ़्ती साहिब कौन हैं ?(1)

1 .....हालाते ज़िन्दगी, हयाते सालिक, स. 122 ता 123 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

मदीने की चोट सीने से लगाए रखी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से एक मदनी मुज़ाकरे में मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के बारे में सुवाल हुवा कि आप इन से इतनी मह़ब्बत क्यूं करते हैं ? वज्ह इरशाद फ़रमा दें। तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जवाब में मुफ़्ती साह़िब की सादगी और मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक आंखों देखा वाक़िआ़ बयान फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे शुरूअ़ से ही मज़हबी माह़ोल मिल चुका था, दीगर उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब पढ़ने के साथ साथ ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की किताबें बिल ख़ुसूस **"जाअल ह़क़"** मुत़ालए में रहा करती थी। आज से कमो बेश 45 साल पहले की बात है उन दिनों मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़ज से वापसी पर बाबुल मदीना कराची तशरीफ़ लाए। हिन्द के सूबा गुजरात के ज़िल्अ़ जुनागढ़ के एक गाऊं नाम कुतयाना की अक्सरिय्यत बुज़ुर्गों की मानने वाली है इसी मुनासिबत से हमारी बरादरी ने बाबुल मदीना ओल्ड सिटी एरिया में कुतयाना मेमन कोम्यूनिटी हॉल क़ाइम कर रखा था चुनान्चे, उसी हॉल में क़िब्ला मुफ़्ती साह़िब का बयान रखा गया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मैं अपने चन्द दोस्तों के साथ वहां पहुंच गया। जब मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

हॉल में तशरीफ़ लाए तो मैं समझ ही नहीं पाया कि बिल्कुल दुब्ले पतले, सादा से कपड़ों में मल्बूस नज़र आने वाली येह शख़्सिय्यत कौन है ? **बा'द में मा'लूम हुवा कि येही मुफ़्ती अहमद यार ख़ान साहिब हैं ! ! !** जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बयान शुरूअ़ फ़रमाया तो आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ना'तिय्या कलाम का एक शे'र पढ़ा, शे'र येह है :

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के ह़बीब
या'नी महबूबो मुह़िब में नहीं मेरा तेरा

फिर इस शे'र की तशरीह़ बयान करते हुवे ह़बीब और शरीक का फ़र्क़ बयान किया कि ह़बीब का मक़ामो मर्तबा क्या है ? और किसे कहते हैं ? और शरीक कौन होता है ? यूं मा'लूम होता था कि ज़बाने मुबारक से इ़ल्म के चश्मे उबल रहे हैं ? मैं ह़ैरान था कि सादगी का येह अन्दाज़ और ऐसा ज़ोरदार इ़ल्मी बयान कि बस कुछ न पूछिये, उसी बयान के दौरान आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना एक वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाया कि मदीनए मुनव्वरा में मेरे हाथ में चोट लग गई थी जिस की वज्ह से हड्डी टूट गई, बड़ा दर्द और तक्लीफ़ हुई डॉक्टरों को दिखाया तो उन्हों ने कहा : ऑप्रेशन कर के हड्डी को जोड़ना पड़ेगा, चुनान्चे, मैं ने अपना ज़ेहन बना लिया कि ऑप्रेशन करवा लेते हैं फिर ख़याल आया कि इस में परेशान होने की क्या ज़रूरत है ? मैं तो मदीने में हूं और येह दर्द भी मुझे मदीने की नूरानी फ़ज़ाओं और पुर कैफ़ हवाओं में मिला है, जूंही दिल में येह ख़याल आया मैं ने फ़ौरन अपने हाथ के टूटे

हुवे हिस्से को बोसा दिया और कहा : ऐ मदीने के दर्द ! तेरी जगह तो मेरे दिल में है, फिर मैं ने ऑप्रेशन का इरादा मुल्तवी कर दिया इस के बा'द दर्द भी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ रफ़्ता रफ़्ता कम होता गया, फिर अपना टूटा हुवा हाथ दिखाते हुवे फ़रमाया कि देखिये ! हाथ की हड्डी अब भी टूटी हुई है, मगर दर्द नहीं हो रहा। येह वाक़िआ सुनाने के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इरशाद फ़रमाया : इस वाक़िए से मैं बड़ा मुतअस्सिर हुवा कि हड्डी टूटे होने के बा वुजूद दर्द नहीं हो रहा और मदीने की चोट को अपने सीने से चिमटाए हुवे हैं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपना येही वाक़िआ तफ़्सीरे नईमी जिल्द 9 सफ़हा 388 में बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : **येह तफ़्सीर मैं ने सरकार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के करम से इसी टूटे हुवे हाथ से लिखी है** ! ! !

मेरा सीना मदीना हो मदीना मेरा सीना हो
रहे सीने में तेरा दर्द पिन्हा या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मेरी ज़ात से किसी को तक्लीफ़ न पहुंचे

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अपनी पूरी ज़िन्दगी इन्तिहाई सादगी और आ़जिज़ी के साथ गुज़ारी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी ज़ात की वज्ह से किसी को तक्लीफ़ देना गवारा न फ़रमाते थे यहां तक कि सफ़र से लौटते तो अकेले ही अपना सामान उठाए चल पड़ते कोई अ़र्ज़ करता तो उसे सामान उठाने की हरगिज़ इजाज़त न देते चुनान्चे, एक मरतबा यौमे रज़ा की मह़फ़िल से फ़ारिग़ हुवे और दीगर रुफ़क़ा के साथ बस में बैठ

कर गुजरात रवाना हो गए, गुजरात पहुंच कर बस से नीचे तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : आप लोग मेरी फ़िक्र न करें और अपने घर जाइये मैं अकेला चला जाऊंगा, रुफ़क़ा ने बार बार इस ख़्वाहिश का इज़हार किया कि पहले आप को घर छोड़ देते हैं इस के बा'द हम अपने घर चले जाएंगे, मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपना सामान उठाए गली महल्लों से होते हुवे लोगों के दरमियान से गुज़रते हुवे घर तशरीफ़ ले आए।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बात वाक़ेई मा'मूली थी और इस में कुछ ह़रज भी न था कि अगर अहले महब्बत आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का सामान उठा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को घर तक छोड़ आते मगर चूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ब ख़ूबी जानते थे कि मैं जिस त़रह़ सफ़र की मुश्किलात और तकालीफ़ बरदाश्त कर के पहुंचा हूं इसी त़रह़ मेरे हम सफ़र भी मुश्किलात और परेशानियों को झेलते हुवे लौटे हैं लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन्हें तक्लीफ़ देना मुनासिब न समझा। यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम बन्दे इस बात को पसन्द नहीं करते कि बिला वज्ह उन की ज़ात की वज्ह से इन्सान तो इन्सान बल्कि कोई जानवर भी परेशानी, ह़रज या तक्लीफ़ में मुब्तला हो। इस दौर के वलिय्ये कामिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मिसाल हमारे सामने है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी इन्सान तो इन्सान बिला वज्ह जानवरों बल्कि च्यूंटी तक को भी तक्लीफ़ देना गवारा नहीं करते ह़ालांकि अ़वामुन्नास की नज़र में इस की कोई वुक़अ़त नहीं। चुनान्चे,

---

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 124 मुलख़्ख़सन

एक मरतबा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में पेश किये गए केलों के साथ इत्तिफ़ाक़न एक छिलका भी आ गया जिस पर एक च्यूंटी बड़ी बेताबी से फिर रही थी। आप फ़ौरन मुआ़मला समझ गए लिहाज़ा फ़रमाया : "देखो ! येह च्यूंटी अपने क़बीले से बिछड़ गई है क्यूंकि च्यूंटी हमेशा अपने क़बीले के साथ रहती है इस लिये बेताब है। बराए मेहरबानी कोई इस्लामी भाई इस छिलके को च्यूंटी समेत ले जाएं और वापस वहीं जा कर रख आएं जहां से उठाया गया है।" यूं वोह छिलका च्यूंटी समेत अपनी जगह पहुंचा दिया गया।(1)

झगड़े निमटाने की ख़ुदादाद सलाहिय्यत

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोह सलाहिय्यत अ़ता फ़रमाई थी कि झगड़ा ख़ानदानी हो या कारोबारी या ज़मीन का, मुआ़मला बद तमीज़ी का हो या लड़ाई भड़ाई या ज़ाती दुश्मनी का लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास अपने अपने मुआ़मलात और झगड़े ले कर आते और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शरीअ़त के पाकीज़ा और सुन्हरी उसूलों की रौशनी में ऐसे प्यारे अन्दाज़ में फ़ैसला इरशाद फ़रमाते और मुआ़मले को सुलझाते कि फ़रीक़ैन ख़ुशी ख़ुशी लौट जाते।(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ब हुस्ने ख़ूबी झगड़े निमटाना और सुल्ह़ करवाना कोई आसान काम नहीं। फ़ैसला हो जाने के बा'द आ़म तौर पर येही नज़र आता है कि कोई ख़ुश है तो कोई ना

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 44

2.....ह़ालाते ज़िन्दगी, स. 182 मुलख़्ख़सन

ख़ुश, कोई ग़म व ग़ुस्से का शिकार है तो किसी को दिल पर पथ्थर रख कर फ़ैसला क़बूल करना पड़ा है और तो और यूं भी देखने में आता है कि फ़ैसले के बा'द फ़रीक़ैन एक दूसरे से दस्त व गिरेबां हैं उम्मत के इसी दर्द और इस्लाह़ के पेशे नज़र मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने 21 रबीउ़ल आख़िर 1432 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 27 मार्च 2011 ईसवी को बाबुल मदीना कराची में वुकला व जजिज़ के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में बयान बनाम "**वकील को कैसा होना चाहिये ?**" फ़रमाया। इस में से चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं (1) फ़रीक़ैन को चाहिये कि वोह उ़लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों। (2) फ़ैसला वोही करे जो इस का अहल हो। (3) फ़रीक़ैन से बराबरी का सुलूक कीजिये। (4) हर फ़रीक़ की बात तवज्जोह से सुनिये। (5) फ़ैसले में जल्दबाज़ी न कीजिये। (6) ख़ूब तह़क़ीक़ से काम लीजिये। (7) ग़ुस्से में फ़ैसला न कीजिये।[1]

तफ़्सीली मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैसला करने के मदनी फूल**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़्ती साह़िब का इ़श्क़े रसूल

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे सरवरे दो जहां, सुल्त़ाने कौनो मकां प्यारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 .....फ़ैसला करने के मदनी फूल, स. 49 बित्तग़य्युर

का ज़िक्रे मुबारक आता तो बे इख़्तियार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर सोज़ो गुदाज़ की एक मख़्सूस कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती जिस के नतीजे में आंख में आंसू भर आते और आवाज़ भारी हो जाती, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को देखने और सुनने वाले हज़ारहा अफ़राद भी इस कैफ़िय्यत को महसूस कर लिया करते थे।[1]

बारगाहे रिसालत से क़लम तोहफ़ा मिला

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی ने तफ़्सीर लिखने के लिये एक बेश क़ीमत क़लम मख़्सूस कर रखा था जिस से तह़रीर व तस्नीफ़ का कोई और काम न करते इस का वाक़िआ़ बयान करते हुवे ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे मदीनए मुनव्वरा में एक दुकान पर एक क़ीमती क़लम बेह़द पसन्द आया दिल में ख़्वाहिश पैदा हुई कि काश ! मेरे पास होता, मगर महंगा होने की वज्ह से ख़रीद न सका और चुप चाप लौट आया लेकिन दिल में बार बार ख़याल आता रहा कि बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इजाज़त मिली तो ह़ाज़िरी की सआ़दत पाई है अगर इसी बारगाह से वोही क़लम अ़त़ा हो जाए तो करम बालाए करम होगा ग़ालिबन उसी दिन या अगले दिन ज़ोहर की नमाज़ मस्जिदे नबवी शरीफ़ में अदा कर के फ़ारिग़ हुवा तो एक साह़िब मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवे और येह कहते हुवे अपनी जेब में हाथ डाला कि मैं आप के लिये एक तोह़फ़ा लाया हूं, हाथ बाहर निकाल कर वोह तोह़फ़ा मेरे सामने रख दिया अब जो मैं ने नज़र उठाई तो सामने वोही बेश क़ीमत क़लम था ह़ालांकि मैं

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 63 मुलख़्ख़सन

ने किसी से भी इस का तज़किरा नहीं किया था मुझे यक़ीन हो गया कि बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में मेरी अ़र्ज़ सुन ली गई है जभी तो मुझे मत़लूबा अ़त़िय्या मिल गया है। इस के बा'द फ़रमाया : अब मैं ने इस क़लम को सिर्फ़ तफ़्सीर लिखने के लिये ख़ास कर लिया है और तफ़्सीर वाली नोट बुक (मुसव्वदे की फ़ाइल) के शुरूअ़ में येह शे'र लिख दिया है।

होंट मेरे हैं मगर इन पे करम है तेरा
उंगलियां मेरी हैं पर इन में क़लम है तेरा

मज़ीद फ़रमाते हैं कि जब येह क़लम ले कर लिखने बैठता हूं तो ऐसे ऐसे मज़ामीन ज़ेह्न में आते हैं कि मैं ख़ुद ह़ैरान रह जाता हूं![1]

मदीने से गुजरात जाने का हुक्म

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی सात मरतबा ह़रमैने शरीफ़ैन की ज़ियारत से फ़ैज़याब हुवे। एक मरतबा ह़ज के बा'द त़वील अ़र्से तक मदीनए मुनव्वरा की पुर कैफ़ और नूरबार फ़ज़ाओं में अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन अय्याम गुज़ारे। साथ ही दिल में येह ख़्वाहिश मचलने लगी कि काश ! कोई ऐसी सूरत निकल आए और मुझे हमेशा के लिये इसी पाक सरज़मीन पर सुकूनत मिल जाए, मस्जिदे नबवी शरीफ़ के क़रीब रहने वाले एक साहिब को ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे कौनो मकां, सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई और येह हुक्मनामा सुनाया गया : अह़मद यार ख़ान से कहो कि वोह गुजरात जाएं और

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 147 मुलख़्ख़सन

तफ़्सीर का काम करें, जब येह पैग़ाम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तक पहुंचाया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बेह़द मसरूर हुवे और फ़रमाने लगे : **बारगाहे रिसालत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह हुक्म मिला है कि गुजरात जाओ, तो अब गुजरात ही मेरे लिये मदीना है!!!**(1)

तिलावते क़ुरआन से मह़ब्बत

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कसरत से ज़िक्रो इ़बादत में मसरूफ़ रहा करते थे। कभी दर्से क़ुरआन देते नज़र आते तो कभी दर्से ह़दीस की बहारें लुटाते, कभी फ़िक़ह व ह़दीस के अस्बाक़ पढ़ाते तो कभी किसी किताब की इ़बारत इम्ला करवाते या फिर किसी साइल को मस्अला इरशाद फ़रमाते, फ़राइज़ो वाजिबात बल्कि नवाफ़िल की अदाएगी में भी कभी सुस्ती न बरतते तिलावते क़ुरआन के लिये तो रोज़ाना का एक वक़्त मुक़र्रर कर लिया था जिस में नाग़ा न होने देते चुनान्चे, जब आख़िरी अय्याम में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़बीअ़त नासाज़ रहने लगी तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अस्पताल में दाख़िल होने से पहले अपने शागिर्दे रशीद ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुन्नबी कौकब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के घर एक रात आराम फ़रमाया, सुब्ह़ हुई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने क़ुरआने मजीद त़लब फ़रमाया। जब मौलाना अ़ब्दुन्नबी कौकब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में क़ुरआने मजीद मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान पेश किया तो उसे देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत ख़ुश हुवे और तिलावत का

(1).....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 127 मुलख़्ख़सन

मुक़र्ररा वज़ीफ़ा पूरा किया । जब अस्पताल में दाख़िल हुवे तो अक्सर येह सोचा करते थे कि यहां क़ुरआने पाक का नुस्ख़ा लाया जाए तो अदबो एह़तिराम के साथ कहां रखा जाए ? फिर एक दिन फ़रमाया : येह बड़ी मह़रूमी है कि अस्पताल में क़ुरआने मजीद की तिलावत के लिये कोई जगह नहीं बनाई जाती ।

दुरूदे पाक नूर व त़हारत का दरया है

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तिलावत के बा'द सब से बड़ा वज़ीफ़ा अपने मह़बूब आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस पर दुरूदो सलाम के गजरे निछावर करना था चुनान्चे, उठते बैठते चलते फिरते वुज़ू हो या न हो हर ह़ालत में दुरूदे पाक ज़बान पर जारी रहता यहां तक कि मुख़ात़ब बात करते हुवे ख़ामोश हो जाता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस मौक़अ़ को ग़नीमत जानते और दुरूदे पाक पढ़ना शुरूअ़ कर देते । एक दफ़्आ़ किसी ने अ़र्ज़ की : बिग़ैर वुज़ू दुरूदे पाक पढ़ना मुनासिब नहीं लगता, तो जवाब में इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स पाक पानी में ग़ोता ज़न होता है उस के बदन पर आलूदगी बाक़ी नहीं रहती इसी त़रह़ दुरूदे पाक नूर व त़हारत का दरया है जो इस में ग़ोता लगाता है उस का बात़िन ख़ुद ब ख़ुद पाक हो जाता है ।[1]

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 118 ता 119 मुलख़्ख़सन

सदरुल अफ़ाज़िल की तरबिय्यत का असर

हज़रते मुफ़्ती अह्‌मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی उस्तादे मोह्‌तरम ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस्तादे मोह़्तरम ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی से दर्सी कुतुब अगर्चे कम पढ़ीं थीं मगर उन्हों ने अपनी ह़कीमाना और मोमिनाना बसीरत से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तरबिय्यत के लिये ऐसे मदनी सांचे तय्यार किये कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दिलो दिमाग़, मिज़ाज बल्कि पूरी शख़्सिय्यत का रंग ही तब्दील हो कर रह गया जिस का इज़्हार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ुद इन लफ़्ज़ों में फ़रमाया करते थे : मेरे पास जो कुछ है सब ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का अ़त़ाकर्दा है।(1)

आ'ला ह़ज़रत से अ़क़ीदत

हज़रते मुफ़्ती अह्‌मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़्मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के साथ बड़ी मह़ब्बत और अ़क़ीदत का इज़्हार किया करते थे जिस का सबब भी सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ाते मुक़द्दसा बनी। वाक़िआ़ कुछ यूं हुवा कि पहली मरतबा जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवे

(1).....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 79 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

तो उन्हों ने आप को आ'ला ह़ज़रत का रिसालए मुबारक (1)"العطایا القدیر فی حکم التصویر" मुत़ालए के लिये मर्ह़मत फ़रमाया, इस रिसाले में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इल्मी अ़ज़्मत का पहली बार एह़सास हुवा और येही एह़सास पहले अ़क़ीदत और फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़िन्दगी का सरमाया बन गया।(2) जब मद्रसए शम्सुल उ़लूम बदायूं में ज़ेरे ता'लीम थे तो बरेली शरीफ़ जा कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवे।(3)

इस्लामी बहनों में मदनी काम

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में येह एह़सास ज़ियादा सताने लगा था कि इस्लामी बहनों में दीनी रुजह़ान कम से कम और इल्मे दीन का फ़ुक़्दान होता जा रहा है चुनान्चे, नेकी की दा'वत के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने घर में बड़ी बहू और छोटी साह़िबज़ादी को मिश्कात और बुख़ारी शरीफ़ का तर्जमा चार साल में पढ़ाया। अ़रबी ज़बान के ज़रूरी क़वाइद और अ़रबी बोल चाल की कुछ मश्क़ भी करवाई नीज़ दर्सो बयान का त़रीक़ा सिखाया। येह त़रीक़ए कार निहायत कारगर

1.....येह रिसाला फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 में मौजूद है
2.....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 92 मुलख़्ख़सन
3.....तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत, स. 54

साबित हुवा और सेंकड़ों इस्लामी बहनें दीनी माहोल से वाबस्ता हुईं और इल्मे दीन के ज़ेवर से आरास्ता हुईं ।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी जिस का आग़ाज़ अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने रुफ़क़ा के साथ 1401 हिजरी में किया था, की बरकतें जहां लाखों लाख इस्लामी भाइयों को नसीब हुईं और वोह सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गए वहीं इस्लामी बहनों को भी गुनाहों से तौबा करने और अपनी ज़िन्दगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात के मुत़ाबिक़ गुज़ारने की कोशिश करने की तौफ़ीक़ मिली । बे नमाज़ी इस्लामी बहनों को नमाज़ों की पाबन्दी नसीब हुई जब कि फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआ़शरे में परवान चढ़ने वाली बेशुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मोमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की दीवानियां बन गईं । गले में दूपट्टा लटका कर शॉपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में भटकने वालियों, नाइट क्लबों और सिनेमा घरों की ज़ीनत बनने वालियों को करबला वाली इफ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की शर्मो ह़या की वोह बरकतें नसीब हुईं कि मदनी बुर्क़अ़ उन के लिबास का लाज़िमी जुज़ बन गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी मुन्नियों और इस्लामी

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 80 मुलख़्ख़सन

बहनों को क़ुरआने करीम हिफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई "मदारिसुल मदीना" और आ़लिमा बनाने के लिये मुतअ़द्दिद "जामिआ़तुल मदीना" क़ाइम हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी में "हा़फ़िज़ात" और "मदनिय्या आ़लिमात" की ता'दाद बढ़ती जा रही है।(1)

मेरी काश ! सारी बहनें, रहें मदनी बुर्क़ओं में
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दीनी व मिल्ली ख़िदमात

शैखुत्तफ़्सीर मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने तक़रीबन पचास साल का अ़र्सा इल्मे दीन की ख़िदमत और इशाअ़त में गुज़ारा। मैदान तक़रीर का हो या तह़रीर का, तदरीस का हो या तह़क़ीक़ का, फ़वाइद क़ौमो मिल्लत के हों या मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना त़रीक़ए कार इल्मी और मुस्बत ही रखा **तह़रीके पाकिस्तान** के सिलसिले में सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی ने क़रार दाद पेश की तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ताईद में अपनी कोशिशें बढ़ा दीं, 1945 ईसवी में नज़रियए पाकिस्तान के लिये बनारस (यु पी हिन्द) में ऑल इन्डिया सुन्नी कॉनफ़रन्स मुन्अ़क़िद हुई तो उस में पेश पेश रहे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मस्लके अहले सुन्नत की तक़विय्यत और तरवीजो इशाअ़त में

1 .....आदाबे त़आ़म, स. 393 बित्तग़य्युर वग़ैरा

कोई कसर न छोड़ी उम्मते मुस्लिमा की कम इल्मी, बद अ़मली और बद ह़ाली को मद्दे नज़र रखते हुवे बेश बहा कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं जिन में आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस्लूबे तह़रीर को आसान, आ़म फ़ेहम और रोज़ मर्रा की मिसालों से मुज़य्यन करते हुवे जगह जगह अदब, मह़ब्बत, ता'ज़ीमे रसूल और इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अनमोल मोती बिखेर दिये हैं।[1]

नोके क़लम की करिश्मा साज़ी

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی कसीरुत्तसानीफ़ बुज़ुर्ग हैं। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़लम मुसलसल गर्म और तेज़ रफ़्तार रहा जिस में बढ़ती उ़म्र और बीमारी के अय्याम भी कुछ कमी न ला सके। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अक्सर कुतुब ज़ेवरे त़बाअ़त से आरास्ता हो चुकी हैं जिन्हें अ़वाम व ख़्वास पसन्दीदगी की निगाह से देखते हैं।

इन में से चन्द एक के नाम येह हैं :

1 : तफ़्सीरे नईमी (ग्यारह जिल्दें)

2 : नूरुल इरफ़ान फ़ी ह़ाशियतुल क़ुरआन

3 : नईमुल बारी फ़ी इन्शिराहुल बुख़ारी (बुख़ारी शरीफ़ की अ़रबी शर्ह़)

4 : मिरआतुल मनाजीह़ (मिश्कातुल मसाबीह़ की उर्दू शर्ह़)

5 : जाअल ह़क़ (अ़क़ाइद पर मुदल्लल ला जवाब किताब)

6 : इल्मुल मीरास

---

1 .....तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत, स. 56

7 : शाने ह़बीबुर्रह़मान मिन आयतुल कुरआन

8 : इस्लामी ज़िन्दगी (इस्लामी तक़रीबात का ज़िक्र और फ़ी ज़माना इन की ख़राबियों का तज़किरा)

9 : इल्मुल कुरआन (कुरआनी इस्तिलाह़ात का मुह़क़्क़िक़ाना बयान)

10 : दीवाने सालिक (ना'तिया कलाम का मजमूआ़)

11 : फ़तावा नईमिय्या

12 : अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पर एक नज़र[1]

मस्नदे इफ़्ता पर जल्वागरी

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने 19 साल की उ़म्र मुबारक में रबीउ़ल अव्वल के पुर बहार महीने की पहली तारीख़ को पहला फ़तवा लिखा। फिर उस्तादे मोह़तरम सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक मुख़्तसर तक़रीब के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जामिआ़ नईमिय्या की मस्नदे इफ़्ता पर फ़ाइज़ फ़रमा दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 1913 ईसवी ता 1957 तक़रीबन चवालीस साल तक फ़तवा नवेसी की ख़िदमत का फ़रीज़ा अन्जाम दिया और अपनी नोके क़लम से हज़ारहा फ़तावा जारी किये। अफ़्सोस आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के तमाम फ़तावा जात को महफ़ूज़ नहीं किया जा सका।[2]

---

1 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 189 ता 192 मुलतक़त़न

2 .....ह़ालाते ज़िन्दगी, स. 187 मुलख़्ख़सन

मुफ़्ती साहिब का ना'तिया दीवान

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी ज़िन्दगी का नस्बुल ऐन बनाया हुवा था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कलाम बनावट से पाक, और आम फ़ेहम होने के साथ साथ सादगी, लताफ़त और फ़साहतो बलागत का मजमूआ है आप का कलाम फ़क़त दा'वा नहीं बल्कि इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सदाक़त पर मब्नी है येही वज्ह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बान मुबारक से कलिमात सिर्फ़ निकलते नहीं बल्कि मचलते भी थे। शाइरी में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपना तख़ल्लुस "सालिक" रखा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मजमूअए कलाम बनाम "दीवाने सालिक" रसाइले नईमिय्या में अपनी खुश्बूएं बिखेर रहा है चन्द अश्आर मुलाहज़ा कीजिये और इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में झूमते जाइये और अपने नसीब चमकाते जाइये :

निसार तेरी चेहल पेहल पर हज़ार ईदें रबीउ़ल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में सभी तो ख़ुशियां मना रहे हैं
ज़माने भर का येह क़ाइदा है कि जिस का खाना उसी का गाना
तो ने 'मतें जिन की खा रहे हैं उन्हीं के हम गीत गा रहे हैं (1)

मदनी माहोल और कुतुबे मुफ़स्सिरे शहीर

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इल्म दोस्त और इल्म के क़द्रदान हैं आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वक़्तन फ़

1 .....रसाइले नईमिय्या, दीवाने सालिक, स. 13

वक़्तन उ़लमा और त़लबा को अपनी कु़र्बतों से नवाज़ते रहते हैं। उन के सामने इ़ल्म के फ़वाइद और इस की अहम्मिय्यत उजागर करते हैं, न सिर्फ़ अपने मुतअ़ल्लिक़ीन और मुरीदीन को उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब पढ़ने का ज़ेह्न अ़त़ा करते हैं बल्कि अपनी तसानीफ़ को जा बजा उ़लमाए अहले सुन्नत के तज़किरे और उन की कुतुब के ह़वाला जात से मुज़य्यन फ़रमाते हैं, जो मुत़ालआ़ करने वालों के दिलो दिमाग़ को बिखरे मोतियों की त़रह़ मुनव्वर कर देते हैं। इन में बिल ख़ुसूस फ़तावा रज़विय्या, बहारे शरीअ़त, तफ़्सीरे नईमी और मिरआतुल मनाजीह़ क़ाबिले ज़िक्र हैं। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की कुतुबो तसानीफ़ को बे पनाह मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है इस की वज्ह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की तरग़ीब के साथ साथ ह़ज़रते मुफ़्ती साह़िब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का अन्दाज़े तह़रीर भी है जिस के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : मैं जब लिखने बैठता हूं तो येह बात मद्दे नज़र रखता हूं कि मैं बच्चों, औ़रतों और देहात के कम पढ़े लोगों से मुख़ात़िब हूं।[(1)] दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना को आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की दो किताबें "इस्लामी ज़िन्दगी" और "इ़ल्मुल कु़रआन" शाएअ़ करने का शरफ़ भी ह़ासिल है। मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने मिश्कात शरीफ़ की शोहरए आफ़ाक़ शर्ह़ **मिरआतुल मनाजीह़** का आग़ाज़ 1959 ईसवी में फ़रमाया जो तक़रीबन 8

1.....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 104

साल में मुकम्मल हुई, जब कि तफ़्सीरे नईमी का आग़ाज़ 1363 हिजरी में फ़रमाया और विसाल मुबारक तक ग्यारह जिल्दों पर अपने इल्मो फ़ैज़ान के चमकते दमकते मोतियों को सजाया।

हकीमुल उम्मत के हिक्मत भरे मदनी फूल

❁ अपने सीने (मुसलमानों के कीने से) साफ़ रखो ताकि इन में मदीने के अन्वार देखो।[1]

❁ मुसलमानों के मज्मओं, दर्से कुरआन की मजलिसों, उ़लमाए दीन व औलियाए कामिलीन की बारगाहों में बद बू दार मुंह ले कर न जाओ।[2]

❁ घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घरवालों को सलाम करते हुवे घर के अन्दर आएं। अगर घर में कोई न हो तो اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहें। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم और قُلْ هُوَ اللهُ शरीफ़ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में बरकत भी।[3]

❁ अगर तुम इ़ज़्ज़त और तरक़्क़ी वाली क़ौम के फ़र्द हो तो

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह, 6/472

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 6/25

3 .....मिरआतुल मनाजीह, 6/9

तुम्हारी हर त़रह़ इ़ज़्ज़त होगी कोई भी लिबास पहनो अगर इन चीज़ों से ख़ाली हो तो कोई लिबास पहनो इ़ज़्ज़त नहीं होगी ।(1)

❁ औ़रत घर में ऐसी है जैसे चमन में फूल और फूल चमन में ही हरा भरा रहता है अगर तोड़ कर बाहर लाया गया तो मुरझा जाएगा । इसी त़रह़ औ़रत का चमन उस का घर और उस के बाल बच्चे हैं उस को बिला वज्ह बाहर न लाओ वरना मुरझा जाएगी ।(2)

❁ मुसलमानों को बरबाद करने वाले अस्बाब में से बड़ा सबब उन के जवानों की बेकारी और बच्चों की आवारगी है ।(3)

❁ ह़लाल रिज़्क़ ह़ासिल करो, बेकारी सदहा गुनाहों की जड़ है, रिज़्क़े ह़लाल से इ़बादत में ज़ौक़, नेकियों का शौक़ और इत़ाअ़त का जज़्बा पैदा होता है ।(4)

मश्हूर तलामिज़ा

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی ने अपनी पूरी ज़िन्दगी अपने क़लम व ज़बान, तफ़क्कुर व तदब्बुर से दीने इस्लाम की ऐसी ख़िदमत फ़रमाई कि रहती दुन्या तक अ़वामो ख़वास इस से फ़ैज़याब होते रहेंगे । इसी सिलसिले की एक कड़ी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शागिर्द हैं जिन की चमक दमक से मस्लके ह़क़ मज़हबे अहले सुन्नत का नाम रौशन व ताबां रहेगा आप के चन्द मश्हूर और नामवर शागिर्दों के नाम ह़स्बे ज़ैल हैं :

1 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 90
2 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 106
3 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 136
4 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 156

ह़ज़रते ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस अ़ल्लामा पीर सय्यिद मुह़म्मद जलालुद्दीन शाह मशहदी क़ादिरी (बानिये जामिआ़ मुह़म्मदिय्या भखी शरीफ़), उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना पीर मुह़म्मद अस्लम क़ादिरी (जामिआ़ क़ादिरिय्या आ़लिमिय्या मराड़ियां शरीफ़ गुजरात), शैख़ुल क़ुरआन ह़ज़रते अ़ल्लामा ग़ुलाम अ़ली औकाड़वी (जामिआ़ ह़नफ़िय्या अशरफ़ुल मदारिस औकाड़ा), सरकारे कलां ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुख़्तार अशरफ़ किछौछवी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, शैख़ुल ह़दीस मौलाना वक़ारुद्दीन (चाटगाम, बंगलादेश), साह़िबज़ादा मुफ़्ती मुख़्तार अह़मद ख़ान رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, साह़िबज़ादा मुफ़्ती इक़्तिदार अह़मद ख़ान رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, मौलाना साह़िबज़ादा सय्यिद मुह़म्मद मसऊ़दुल ह़सन चौराही رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़ब्दुन्नबी कौकब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मर्कज़ुल औलिया लाहौर), मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान मुफ़्ती मुह़म्मद ह़ुसैन नईमी (बानी जामिआ़ नईमिय्या, मर्कज़ुल औलिया लाहौर), साह़िबज़ादा मौलाना सय्यिद मह़मूद शाह गुजराती رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, ख़त़ीबे पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना सय्यिद ह़ामिद अ़ली शाह गुजराती (गुलज़ारे त़यबा सरगोधा), नसीरे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती नसीरुद्दीन अशरफ़ी चिश्ती क़ादिरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (ख़ानक़ाहे पनासी शरीफ़ ज़िल्अ़ किशन गंज मशरिक़ी बिहार हिन्द)(1)

निकाह़ व औलाद

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی दो मरतबा रिश्तए इज़्देवाज से मुन्सलिक हुवे जिन से आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(1).....ह़ालाते ज़िन्दगी, ह़याते सालिक, स. 188 मुलतक़त़न वग़ैरा

की पांच बेटियां और दो बेटों की पैदाइश हुई साहिबज़ादों के नाम येह हैं :

1 : मश्हूर ख़तीब हज़रते मुफ़्ती मुख़्तार अहमद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

2 : हज़रते मौलाना मुफ़्ती इक़्तिदार अहमद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

हकीमुल उम्मत का लक़ब कैसे मिला ?

1957 ईसवी में आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के शोहरए आफ़ाक़ तर्जमए क़ुरआन बनाम "कन्ज़ुल ईमान" पर हाशिया या'नी मुख़्तसर तफ़्सीरी निकात तहरीर फ़रमाए तो हज़रते पीर सय्यिद मा'सूम शाह नोशाही क़ादिरी عَلَیْہِ رَحمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی की तहरीक पर पाकिस्तान के जय्यिद उ़लमाए किराम ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर "**हकीमुल उम्मत**" का लक़ब तजवीज़ फ़रमाया और हिन्दुस्तान के उ़लमाए अहले सुन्नत ने इसे तस्लीम किया ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْمَنَّان उन शहसुवाराने इस्लाम में हैं जिन पर क़ौमे मुस्लिम को हमेशा फ़ख़्र रहेगा । आप की ज़ाते वाला सिफ़ात अपने वक़्त की उन मुक़्तदर हस्तियों में से थी जिन को क़ौम की पेशवाई और नब्बाज़े उम्मत होने का सहरा सजता है । आप अ़क़्ले इरफ़ानी, इल्मे ईमानी और मा'रिफ़ते रूहानी के इमाम और कसीरुल करामात बुज़ुर्ग गुज़रे हैं ।

आइये आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चन्द करामात सुनिये और अ़क़ीदत और महब्बत के इस महल की बुन्यादों को मज़बूत़ कीजिये ।

---

(1).....हालाते ज़िन्दगी, स. 186 मुलख़्ख़सन

थानेदार ने चाए बिस्कुट खिलाए

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के एक देरीना दोस्त ह़कीम सरदार अ़ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि एक मरतबा मेरे एक शरारती पड़ोसी ने मेरी झूटी शिकायत पुलीस थाने में कर दी जिस की वज्ह से थानेदार ने मुझे थाने में ह़ाज़िरी का हुक्म दे दिया, मैं बहुत डर गया था लिहाज़ा थाने जाने से पहले आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि मुझे पुलीस वालों ने बुलाया है पता नहीं वोह मुझ से क्या सुलूक करेंगे ? आप दुआ़ फ़रमाएं। उस वक़्त मौसिमे सरमा होने की वज्ह से हवा में ख़ुनकी थी और धूप में तेज़ी न थी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तवज्जोह से मेरी अ़र्ज़ सुनी और मुस्कुराते हुवे फ़रमाया : ह़कीम साह़िब ! मेरी येह छत्री अपने साथ ले जाएं और थाने में ह़ाज़िरी दे आएं, मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! न तो गर्म धूप है न बारिश है तो फिर छत्री क्यूं ले जाऊं ? इरशाद फ़रमाया : ले तो जाएं। चुनान्चे, मैं ने हुक्म की ता'मील में बन्द छत्री हाथ में पकड़ी और थाने चला आया, जब थानेदार के पास पहुंचा तो वोह मुझे देखते ही खड़ा हो गया और पुर तपाक अन्दाज़ में मिला फिर कुरसी पेश करते हुवे पूछने लगा : बाबा जी ! आप क्यूं आए हैं ? मैं ने कहा : मेरा नाम ह़कीम सरदार अ़ली है, उस ने कहा : आप को किस ने बुलवाया है ? मैं ने फिर कहा : मेरा नाम ह़कीम सरदार अ़ली है, इस पर वोह कहने लगा : "अच्छा ! याद आया कि आप

के फुलां पड़ोसी ने आप की शिकायत की है लेकिन **अब हम आप से कुछ पूछ गछ नहीं करेंगे ! आप जा सकते हैं ।"** मैं ने खुदा तआ़ला का शुक्र अदा किया और वापस चल पड़ा। थोड़ी दूर तक चला था कि मुझे फिर बुलवा लिया और कहने लगा : बैठिये ! हम आप को चाए पिलाते हैं, फिर सिपाही को पैसे देते हुवे कहा : चाए बिस्कुट ले आओ, मैं ने बहुत मन्अ़ किया मगर वोह न माना और चाय बिस्कुट से मेरी ख़ातिर तवाज़ोअ़ कर के ही दम लिया। फिर जब मैं जाने लगा तो खड़े हो कर मुझे रुख़्सत किया, मैं ह़ैरत के समन्दर में ग़ोते खा रहा था कि थानेदार से न जान पहचान न वाक़िफ़िय्यत मगर फिर भी मेरा इस क़दर एह़तिराम ! या इलाही ! येह माजरा क्या है ? मैं थाने से फ़ारिग़ हो कर सीधा मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और वाक़िआ़ कह सुनाया जिसे सुनते ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुस्कुराए और सुवालिया अन्दाज़ में फ़रमाने लगे : **छत्री भारी तो नहीं थी ?** तब मैं अस्ल राज़ समझा कि थाने में मेरी इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई की अस्ल वज्ह इस वलिय्ये कामिल की छत्री थी। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : दो नफ़्ल शुक्राने के पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लाज और इ़ज़्ज़त रख ली और बड़ी मुसीबत टल गई।(1)

दो खूंख़्वार कुत्ते

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के मश्हूर शागिर्द ह़ज़रते मौलाना सय्यिद निज़ाम अ़ली शाह (ह़ज़रो, अटक) फ़रमाते हैं : उस्तादे मोह़तरम क़िब्ला मुफ़्ती अह़मद

(1).....ह़ालाते ज़िन्दगी, सवानेहे उ़म्री, स. 30 मुलख़्ख़सन

यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان रोज़ाना बा'द नमाज़े अ़स्र सैर करते हुवे सच्ची सरकार साईं करमे इलाही कानुवां वाली सरकार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुवा करते थे। रास्ते में एक बद बात़िन का मकान था जो क़िब्ला उस्तादे मोह़तरम मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان से दरे पर्दा सख़्त दुश्मनी रखता था उस ने चन्द ख़ूंख़्वार कुत्ते पाले हुवे थे। एक दिन मैं क़िब्ला उस्तादे मोह़तरम के हमराह था कि उसे न जाने क्या सूझी कि दो सख़्त ख़ूंख़्वार कुत्ते खुले छोड़ दिये जब हम उस की पगडन्डी पर पहुंचे तो उस वक़्त वोह अपने दरवाज़े पर खड़ा था। हमें देखते ही उस ने दोनों कुत्तों को इशारा किया जो इशारा पाते ही तेज़ी से हमारी जानिब लपके, मैं घबरा गया और अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अब क्या बनेगा ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ख़ामोशी से बढ़ते रहो, जब कुत्ते तक़रीबन पांच गज़ के फ़ासिले पर थे तो यूं मह़सूस हुवा कि किसी ने दोनों कुत्तों को सख़्त कारी ज़र्ब लगाई हो जिस की वज्ह से दोनों ने निहायत कर्बनाक अन्दाज़ में चीख़ना शुरूअ़ कर दिया। फिर एक कुत्ता दाईं त़रफ़ जब कि दूसरा बाईं त़रफ़ भाग गया, दूसरे दिन सुनने में आया कि दोनों कुत्ते उसी तक्लीफ़ में चीख़ते चिल्लाते मर गए मैं ने उस्तादे मोह़तरम क़िब्ला मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان की ख़िदमत में अ़र्ज़ की तो इरशाद फ़रमाया : हमारे बचाने वाले भी हर वक़्त हमारे साथ रहते हैं।(1)

1.....ह़ालाते ज़िन्दगी, सवानेहे उ़म्री, स. 32 मुलख़्ख़सन

क्यूं कर न मेरे काम बनें ग़ैब से हसन
बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन माह की ज़िन्दगी तोहफ़े में मिली

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के शागिर्द मौलाना हाफ़िज़ सय्यिद अ़ली साहिब का बयान है : एक मरतबा मैं उस्तादे मोहतरम मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان की हमराही में साईं करमे इलाही कानुवां वाली सरकार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अनवार पर हाज़िरी से फ़ैज़याब हो कर लौट रहा था कि उस्तादे मोहतरम ने मुझ से फ़रमाया : मैं आप को एक बात बताना चाहता हूं किसी से मत कहियेगा, मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! किसी से नहीं कहूंगा, तो फ़रमाया : आज से दस दिन पहले प्यारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा तो सरकारे दो जहां, मालिके कौनो मकां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी ज़िन्दगी के दिन पूरे हो चुके हैं ! मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे इतनी मोहलत और अ़ता फ़रमाइये कि आयते मुबारका

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ (پ:۱۱، یونس ۶۲)

की तफ़्सीर लिख लूं, चुनान्चे, मेरी इल्तिजा मन्ज़ूर हो गई और मुझे मज़ीद तीन माह की ज़िन्दगी रह़मतुल्लिल आ़लमीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ

से अ़ता हो गई अब मेरी येह ज़िन्दगी बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जानिब से अ़तिय्या और तोह़फ़ा है ।(1)

मजलिसे मज़ाराते औलिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फैलाने, इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने और लोगों के दिलों में औलिया उल्लाह की मह़ब्बतो अ़क़ीदत बढ़ाने में मसरूफ़ है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ (तादमे तह़रीर) दुन्या के कमो बेश 200 मुमालिक में इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है । सारी दुन्या में मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तादमे तह़रीर (रमज़ानुल मुबारक 1435 हिजरी) 96 शो'बाजात क़ाइम हैं, इन्ही में से एक "मजलिसे मज़ाराते औलिया" भी है जो दीगर मदनी कामों के साथ साथ दर्जे ज़ैल ख़िदमात अन्जाम दे रही है ।

1 : येह मजलिस औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के रास्ते पर चलते हुवे मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर होने वाले इस्लामी भाइयों में मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां है ।

2 : येह मजलिस ह़त्तल मक़्दूर साह़िबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त करती है ।

3 : मज़ारात से मुलह़िक़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाती और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है जिन में वुज़ू,

---

(1).....ह़ालाते ज़िन्दगी, सवानेहे उ़म्री, स. 35 मुलख़्ख़सन

ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और इस का दुरुस्त त़रीक़ा नीज़ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं।

4 : आ़शिक़ाने रसूल को ह़स्बे मौक़अ़ अच्छी अच्छी निय्यतों मसलन बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देने या सुनने, साह़िबे मज़ार के ईसाले सवाब के लिये हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी या'नी क़मरी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ों के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहने की तरग़ीब दी जाती है।

5 : "मजलिसे मज़ाराते औलिया" अय्यामे उ़र्स में साह़िबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब का तोह़्फ़ा भी पेश करती है और साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साह़िबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के उन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क में होने वाले मदनी काम वग़ैरा से आगाह रखती है।

6 : मज़ारात पर ह़ाज़िरी देने वाले इस्लामी भाइयों को शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़त़ाकर्दा नेकी की दा'वत भी पेश की जाती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ता ह़यात औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का अदब करते हुवे इन के दर से फ़ैज़ पाने की तौफ़ीक़

अ़ता फ़रमाए और इन मुबारक हस्तियों के सदके़ दा'वते इस्लामी को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़ाराते औलिया पर दी जाने वाली नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को मज़ार शरीफ़ पर आना मुबारक हो, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़ों का सिलसिला जारी है, यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं, अ़न क़रीब हमें अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा, इन अनमोल लम्ह़ात को ग़नीमत जानिये और आइये ! अह़कामे इलाही पर अ़मल का जज़्बा पाने, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और **अल्लाह** के नेक बन्दों के मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब सीखने सिखाने के लिये मदनी ह़ल्क़ों में शामिल हो जाइये। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को दोनों जहां की भलाइयों से माला माल फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

विसाले मुबारक और आख़िरी आराम गाह

ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़बीअ़त नासाज़ रहने लगी थी चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मर्कज़ुल औलिया लाहौर के अस्पताल में दाख़िल कर दिया गया

जहां चन्द दिन रह कर 3 रमज़ानुल मुबारक 1391 हिजरी ब मुताबिक़ 24 अक्तूबर 1971 ईसवी को इल्मो अ़मल का येह आफ़्ताब अपनी ज़िन्दगी की किरनों को समेटते हुवे अपने पीछे लाखों लाख लोगों को सोगवार छोड़ कर नज़रों से ओझल हो गया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रिह़लत से इस्लामी दुन्या में ग़म की लहर दौड़ गई, हर गली सूनी हो गई, हर कूचा बे रौनक़ हो गया, हर आंख नम और दिल अफ़्सुर्दा हो गया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की नमाज़े जनाज़ा ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते सय्यिद अबुल बरकात अह़मद क़ादिरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه (शैख़ुल ह़दीस दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़ मर्कज़ुल औलिया लाहौर) ने पढ़ाई। बा'दे विसाल आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का चेहरए मुबारका फूल की त़रह़ खिला हुवा था और येह तसव्वुर करना मुश्किल था कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर मौत की कैफ़िय्यत त़ारी हो चुकी है! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आख़िरी आराम गाह गुजरात सिटी (पंजाब, पाकिस्तान) में है।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ज़ालिये ज़मां और मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां पर सुल्ताने दो जहां का एह़सां

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه अपनी मायानाज़ तालीफ़ "आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात" के

1.....तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत, स. 58 मुलख़्ख़सन

सफ़हा 162 पर नक़्ल फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते शैख़ अ़लाउद्दीन अल बिकरी अल मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के वालिदे मोहतरम हज़रते शैख़ अ़ली हुसैन मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के हां मदीनए तय्यिबा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में महफ़िले मीलाद मुन्अ़क़िद हुई जो कि पुरज़ौक़ महफ़िल थी और अन्वारे नबवी ख़ूब चमके। महफ़िल के इख़्तिताम पर मीरे मेहफ़िल ने तबर्रुकन जलेबी तक़्सीम की और फ़रमाया : आज रात मीलाद की जलेबी खाने वाले को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की عَزَّوَجَلَّ اِنْ شَآءَاللّٰه ज़ियारत होगी, कल अ़लल सुब्ह बा'द नमाज़े फ़ज्र मस्जिदुन्नबवियिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام में हर एक अपनी कैफ़िय्यते दीदार सुनाए। हाजी ग़ुलाम हुसैन मदनी मर्हूम का बयान है عَزَّوَجَلَّ اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने भी वोह जलेबी खाई थी, मुझे सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा, मैं ने इस हाल में हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, कि दाहिनी जानिब बग़ल में (ग़ज़ालिये ज़मां राज़िये दौरां) हज़रते क़िब्ला सय्यिद अहमद सईद काज़िमी शाह साहिब (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) हैं और दूसरे हाथ में (मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रत) मुफ़्ती अहमद यार ख़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان) का हाथ पकड़ रखा है।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 .....अन्वारे कुत़बे मदीना, स. 53

इक नज़र सवानेहे उ़म्री[1] पर

नम्बर शुमार	वाक़िआ़त	सिने ईसवी	सिने हिजरी	दिन
1	विलादते बा सआ़दत	1894	1314	जुमा'रात
2	ख़त्मे क़ुरआने मजीद	1899	1319	जुमा'रात
3	पहला दर्सो बयान	1904	1324	जुमा'रात
4	पहली तस्नीफ़ हाशिया सदरा	1910	1330	
5	पहला मुनाज़िरा, ब उ़म्र सोलह साल	1910	1330	
6	दूसरी तस्नीफ़ इल्मुल मीरास	1911	1331	8 दिन में
7	दस्तारे फ़ज़ीलत	1914	1334	बुध
8	मस्नदे इफ़्ता पर जल्वागरी	1914	1334	इतवार
9	इज़्देवाजी ज़िन्दगी का आग़ाज़	1914	1334	जुमुआ़
10	गुजरात (पंजाब) में आमद	1933	1353	
11	मद्रसए ग़ौसिय्या (पंजाब) का क़ियाम	1953	1373	
12	विसाल शरीफ़	1971	1391	इतवार

1.....हालाते ज़िन्दगी, सवानेहे उ़म्री, स. 12 मुल्तकत्न

फ़ेहरिस

उनवान	सफ़ह	उनवान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ग़लती का बर मला ए'तिराफ़	18
तारीख़ व मक़ामे विलादत	3	तालिबुल इल्म हो तो ऐसा !	20
वालिदे माजिद के हालात	3	खाने की क़तार में पीछे रहते	21
मस्जिद से महब्बत	6	तदरीसी दौर की झलकियां	23
ज़मानए तालिबे इल्मी	8	मुफ़्ती साहिब के दिन रात का जदवल	24
सदरुल अफ़ाज़िल की बारगाह में	9	ग़ौसे आ'ज़म से वालिहाना महब्बत	26
शौक़े इल्म का दिया जलता रहता	12	एक से ज़ाइद घड़ियां रखते	27
इमाम मुहम्मद का शौक़े मुतालआ	12	नमाज़ के वक़्त बस ! नमाज़ की तय्यारी हो	28
आ'ला हज़रत का ज़ौक़े मुतालआ	13	आशिक़े नमाज़े बा जमाअत	29
अमीरे अहले सुन्नत का अन्दाज़े मुतालआ	14	मुफ़्ती साहिब का खाना	30
दीनी मुतालए के मदनी फूल	14	खाने का अन्दाज़	31

मुफ़्ती साहिब के ख़ानगी मुआमलात	32	मस्नदे इफ़्ता पर जल्वागरी	51
सादगी व आजिज़ी	35	मुफ़्ती साहिब का ना'तिया दीवान	52
मदीने की चोट सीने से लगाए रखी	36	मदनी माहोल और कुतुबे मुफ़स्सिरे शहीर	52
मेरी ज़ात से किसी को तक्लीफ़ न पहुंचे	38	हकीमुल उम्मत के मदनी फूल	54
झगड़े निमटाने की खुदा दाद सलाहिय्यत	40	मश्हूर तलामिज़ा	55
मुफ़्ती साहिब का इश्के रसूल	41	निकाह व औलाद	56
बारगाहे रिसालत से क़लम तोहफ़ा मिला	42	हकीमुल उम्मत का लक़ब कैसे मिला ?	57
मदीने से गुजरात जाने का हुक्म	43	थानेदार ने चाए बिस्कुट खिलाए	58
तिलावते कुरआन से महब्बत	44	दो खूंख़्वार कुत्ते	59
दुरूदे पाक नूर व तहारत का दरया है	45	तीन माह की ज़िन्दगी तोहफ़े में मिली	61
सदरुल अफ़ाज़िल की तरबिय्यत का असर	46	मजलिसे मज़ाराते औलिया	62
आ'ला हज़रत से अक़ीदत	46	मज़ाराते औलिया पर नेकी की दा'वत	64
इस्लामी बहनों में मदनी काम	47	विसाले मुबारक और आख़िरी आराम गाह	64
दीनी व मिल्ली ख़िदमात	49	ग़ज़ालिये ज़मां और हकीमुल उम्मत पर करम	65
नोके क़लम की करिश्मा साज़ी	50	इक नज़र सवानेहे उम्री पर	67

ماخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مطبوعہ
1	قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ، کراچی
2	کنزالایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ، کراچی
3	تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ، کراچی
4	صحیح مسلم	دارالمغنی، عرب شریف
5	سنن ابی داود	داراحیاء التراث العربی
6	سنن ابن ماجه	دارالمعرفۃ، بیروت
7	سنن ترمذی	دارالفکر، بیروت
8	مجمع الزوائد	دارالفکر، بیروت
9	کنزالعمال	دارالکتب العلمیہ، بیروت
10	مسند أبی یعلی	دارالکتب العلمیہ، بیروت
11	تاریخ بغداد	دارالکتب العلمیہ، بیروت
12	تعلیم المتعلم طریق التعلم	باب المدینہ، کراچی
13	بهجة الاسرار	دارالکتب العلمیہ، بیروت
14	مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء، لاہور
15	حیات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ، کراچی
16	حالات زندگی	نعیمی کتب خانہ، گجرات
17	تذکرہ اکابر اہل سنت	فرید بک سٹال، مرکز الاولیاء، لاہور
18	رسائل نعیمیہ، دیوان سالک	ضیاء القرآن، مرکز الاولیاء، لاہور
19	انوار قلب مدینہ	برکاتی پبلشرز، باب المدینہ کراچی
20	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
21	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
22	مطالعہ کیا کیوں اور کیسے؟	نور شریعت اکیڈمی، باب المدینہ کراچی
23	شوق علم دین	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
24	تکبر	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
25	تعارف امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
26	فکر مدینہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
27	فیصلہ کرنے کے مدنی پھول	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
28	تربیت اولاد	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

ISBN 978-969-631-432-5
0125149

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

MC 1286